संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-20 अंक- 326
पृष्ठ 8
गुरुवार
15 अगस्त 2024
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- सुधार लें एक हिस्से से खाना...

विचार- पेरिस ओलिम्पिक का खट्टा-मीठा समापन

खेल- रिकी पोंटिंग ने की गौतम गंभीर ...

विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस : पीएम मोदी ने पीड़ितों को किया याद, कहा-

यह लोगों के साहस को श्रद्धांजलि देने का दिन

- **अमित शाह ने विभाजन से प्रभावित लोगों को याद किया**
- **2021 से मोदी सरकार मना रहीं विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस**

नई दिल्ली, एजेंसी। स्वतंत्रता दिवस से एक दिन पहले विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन लोगों को याद किया, जो विभाजन के दौरान प्रभावित हुए थे। उन्होंने कहा कि आज का दिन विभाजन से प्रभावित लोगों के साहस को श्रद्धांजलि देने का दिन है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी 1947 में विभाजन के दौरान प्रभावित लोगों को श्रद्धांजलि दी। इस दौरान शाह ने कहा कि जो राष्ट्र अपने इतिहास को याद रखता है वह अपना भविष्य बनाने के साथ एक शक्तिशाली देश के रूप में उभर सकता है। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा, विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस पर हम उन लोगों को याद करते हैं जो विभाजन के दौरान प्रभावित हुए थे। यह उनके साहस को श्रद्धांजलि देने का भी दिन है। विभाजन के दौरान कई लोग प्रभावित हुए, उन्हें अपना जीवन फिर से शुरू करना पड़ा।

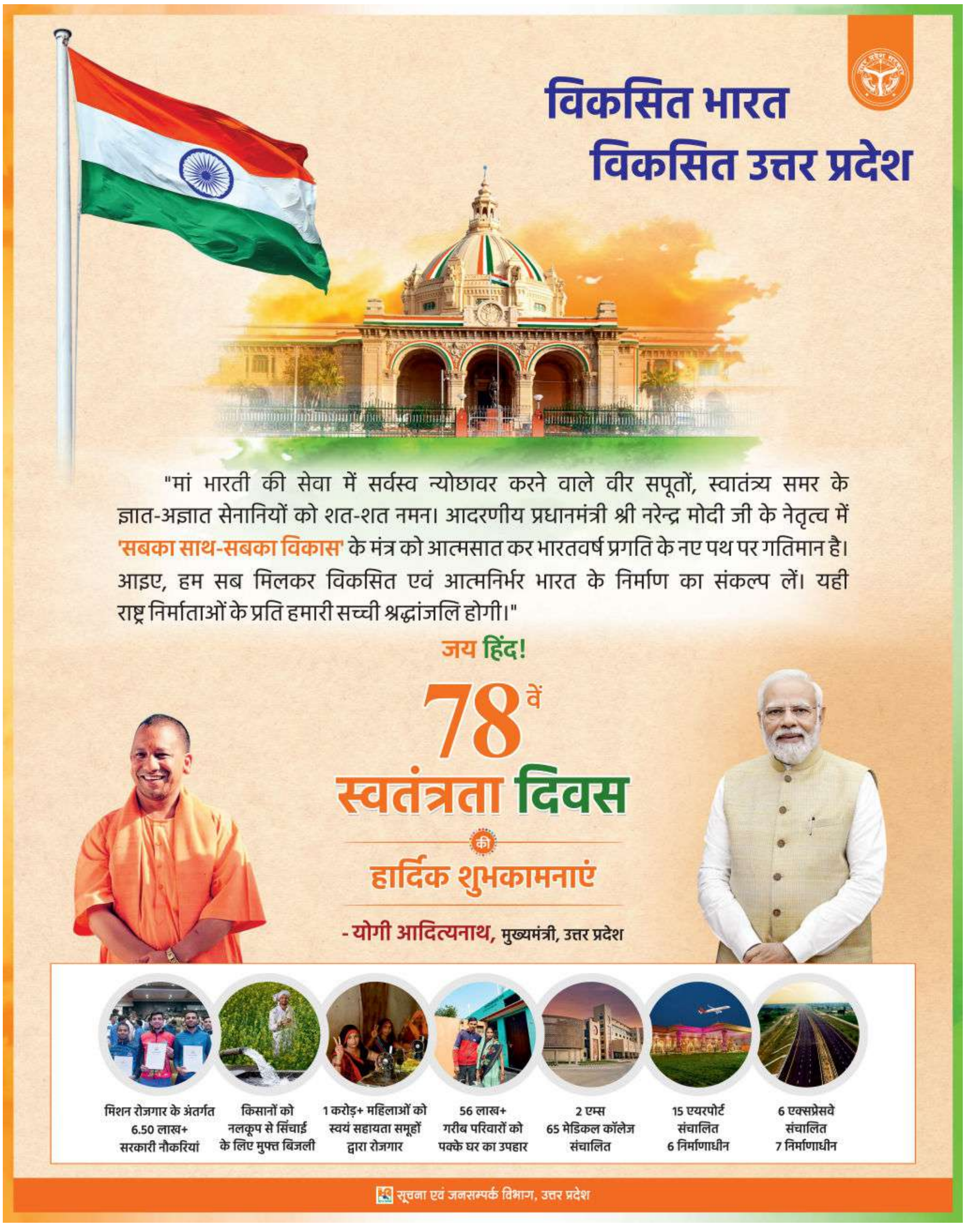

जम्मू-कश्मीर में आंतकी खतरों को लेकर सरकार अलर्ट

- **राजनाथ ने एनएसए-सेना प्रमुख की मौजूदगी में बुलाई बैठक**

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में लगातार आंतकी घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। ऐसे में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस विषय में चर्चा करने के लिए आज एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई। अधिकारियों के अनुसार, रक्षा सचिव गिरिधर अरमाने, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल, सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी, सैन्य अभियानों के महानिदेशक-लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा और सुरक्षा संबंधी एजेंसियों के प्रमुख बैठक में मौजूद हैं। यह बैठक साउथ ब्लॉक में हो रही है। कल 15 अगस्त यानी स्वतंत्रता दिवस है। इसलिए सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा बलों को हाई अलर्ट पर रखा गया है। इससे पहले 10 अगस्त को अनंतनाग में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ के दौरान कम से कम दो सैनिक और एक नागरिक की मौत हो गई थी। अनंतनाग के कोकेरनाग के जनरल एरिया में भारतीय सेना, जम्मू-कश्मीर पुलिस और सीआरपीएफ द्वारा शुरू किए गए एक संयुक्त अभियान के दौरान मुठभेड़ शुरू हुई थी।

प्रशिक्षु डॉक्टर से दुष्कर्म एवं हत्या मामला: सीबीआई ने शुरू की जांच

कोलकाता, एजेंसी। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के फोरेंसिक विशेषज्ञों की एक टीम बुधवार को दिल्ली से कोलकाता पहुंची और पिछले सप्ताह एक सरकारी अस्पताल में प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और हत्या के मामले की जांच शुरू कर दी।

डोडा में मुठभेड़ वाले स्थल से एम4 राइफल बरामद, सुरक्षा बलों का अभियान जारी

जम्मू, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर में डोडा जिले के जंगलों में आतंकवादियों के साथ चल रही मुठभेड़ वाले स्थल से सुरक्षा बलों ने बुधवार को एक एम 4 राइफल और युद्ध जैसे अन्य सामान बरामद किये। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि एक एम 4 राइफल बरामद की गई है। मुठभेड़ वाले स्थल पर खून के धब्बे पाए गए हैं और डोडा जिले के अस्सार बेल्ट में नदी क्षेत्र के पास से तीन रक्सैक (पीठ पर लटकाने वाले बैग) भी जब्त किए गए हैं। गौरतलब है कि डोडा जिले के अस्सार इलाके में मंगलवार शाम सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ शुरू हुई थी। सेना के व्हाइट नाइट कोर ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, ष्विशिष्ट खुफिया सूचनाओं के आधार पर भारतीय सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने पटनीटॉप के पास अकर वन में संयुक्त अभियान शुरू किया।

शुभकामना

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर समस्त नागरिकों, सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं एवं शुभेच्छुओं को हार्दिक शुभकामनायें।

-सम्पादक

सूचना

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में प्रेस व कार्यालय में 15 अगस्त को अवकाश रहेगा। अतः अगला अंक 17 अगस्त को प्रकाशित होगा।

-व्यवस्थापक

तिरंगा लेकर संगमनगरी की सड़कों पर उमड़ा तीन किमी लंबा कारवां

प्रयागराज। झमाझम बारिश के बीच हाथों में तिरंगा और लबों पर देशभक्ति के तराने। कदम–कदम पर भारत माता की जय... वंदे मातरम... इंकलाब जिंदाबाद....के गगनभेदी जयकारे बुधवार की सुबह संगम के शहर की सड़कों पर गूंजने लगे। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में निकाली गई तिरंगा यात्रा को बतौर मुख्य अतिथि औद्योगिक विकास मंत्री नंदी ने सुबह 8रू30 बजे पत्थर गिरजाघर के पास बारिश में भीगते हुए हरी झंडी दिखाई। इसके बाद मंत्री नंदी ने हेलमेट के साथ खुद बाइक पर यात्रा का नेतृत्व संभाल लिया। उनके साथ बाइक पर आरएएफ के कमांडेट मनोज कुमार गौतम थे। दूसरी कतार में आईटीबीपी के सेंकेंड इन कमांड प्रवीण चंद्र दास चल रहे थे। सबसे आगे आईटीबीपी का बैंड आजादी के तरानों पर शौर्य धुन बजाता चल रहा था। आईटीबीपी के बैंड पर ऐ मेरे वतन के लोगो... जहां डाल –डाल पर सोने की चिडिया करती है बसेरा... यह देश केवीर जवानों का अलबेलों का मस्तानों का ... जैसे देशभक्ति के गीतों पर राष्ट्र नायकों के शौर्य का गान होता रहा। इस दौरान राष्ट्रभक्ति के गीतों की धुन के साथ मां तुझे प्रणाम के सुसज्जित वाहन पर स्वतंत्रता उत्सव से ओतप्रोत संदेश दिए जा रहे थे। यह बाइक यात्रा पत्थर गिरजाघर से सुभाष चौराहा, हनुमत निकेतन चौराहा से प्रयाग संगीत समिति, चंद्रशेखर आजाद पार्क गेट नंबर –एक से सेंट जोसफ स्कूल एंड कॉलेज, नाजरेथ अस्पताल से होते हुए इलाहाबाद संग्रहालय, हिंदू हॉस्टल चौराहा से लोक सेवा आयोग चौराहा, धोबीघाट चौराहा, विवेकानंद चौराहा से एकलव्य चौराहे होते हुए पुनरू पत्थर गिरजाघर पहुंची। यहां वतन पर मिटने वाले अमर शहीदों की कुर्बानी को याद किया गया। इस दौरान हाकोर्ट, जिला अदालत के वकीलों, शहर के व्यापारी संगठनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, योग प्रशिक्षकों, खिलाडिघ्यों, महिलाओं और छावनी बोर्ड के कर्मचारियों का उत्साह देखते बन रहा था।

स्वतंत्रता पर्व राष्ट्रभक्तों की कुर्बानी का अमूल्य उपहार,इसे संजो कर रखेंः नंदी

सूबे के औद्योगिक विकास मंत्री नंदगोपाल गुप्ता नंदी ने कहा कि क्रांतिवीरों की कुर्बानी, त्याग, बलिदान की बदौलत यह स्वतंत्रता हमें मिली है।

इस स्वतंत्रता के लिए न जाने कितनी माताओं, बहनों ने अपने मांगों का सिंदूर धोया है। हमें उस कुर्बानी को हमेशा के लिए याद रखना और आने वाली पीढिघ्यों के लिए सहेजना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सीएम योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में आज देश–प्रदेश पूर दुनिया में शिखर पर गरिमा को स्थापित कर रहा है। हमें स्वतंत्रता के इस अमूल्य उपहार को हमेशा थाती की तरह सहेज कर रखने का संकल्प लेना होगा।

यह अमर बलिदानियों को याद रखने का ऐतिहासिक अवसर है।

घर–घर तिरंगा, मेर माटी मेरा देश का संदेश इस बाइक तिरंगा रैली से सफल हो गया। जाति–धर्म से ऊपर उठकर देश भक्ति के रंग में रंगने के लिए इस यात्रा में हर वर्ग के लोगों का शामिल होना सुखद रहा। देश ही हमारे लिए प्रथम है। – मनोज कुमार गौतम, कमांडेंट–101वीं वाहिनी रैपिड एक्शन फोर्स।

बाइक तिरंगा यात्रा के सारथी

इस यात्रा में सेवानिवृत्त आईएएस आरएस वर्मा, आरपी पांडेय, भारतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के महानगर अध्यक्ष योगेश गोयल, नवीन अग्रवाल, लालू मित्तल, अनिमेष अग्रवाल, महेंद्र गोयल, कृष्ण मुरारी अग्रवाल, रोहित गुप्ता ,आकाशवाणी के उद्घोषक संजय पुरुषार्थी, राज्य कर्मचारी महासंघ के अध्यक्ष राग विराग त्रिपाठी, समाजसेवी सरदार पतविंदर सिंह,सुमित श्रीवास्तव , टेंपो टैक्सी यूनियन के अध्यक्ष रघुनाथ द्विवेदी, सिविल डिफेंस के रवि शंकर द्विवेदी, हाईकोर्ट के वरिष्ठ वकील राजेश पांडेय, दीपक मिश्र, रमेश चंद्र ओझा, वर्षा फाउंडेशन की अध्यक्ष वर्षा मिश्रा, योग प्रशिक्षक डॉ. दीप्ति योगेश्वर समेत तमाम लोग शामिल थे।

प्रयागराज में डॉक्टरों के समर्थन में उतरा दिशा छात्र संगठन

एसआरएन हॉस्पिटल में आंदोलित हैं रेजिडेंट डॉक्टरय लेडी डॉक्टर से रेप–मर्डर का मामला

प्रयागराज। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में लेडी डॉक्टर के साथ रेप और हत्या के बाद देश भर के डॉक्टर आक्रोशित हैं। पिछले 2 दिनों से मोतीलाल नेहरू मेडिकल

कॉलेज के एसआरएन अस्पताल में रेजिडेंट डॉक्टर हड़ताल पर हैं। मंगलवार की देर शाम रेजिडेंट डॉक्टरों ने कैंडल मार्च निकालकर मृतका लेडी डॉक्टर को श्रद्धांजलि दी। वहीं दूसरी ओर, अब दिशा छात्र संगठन और नौजवान भारत सभा के कार्यकर्ता भी उनके समर्थन में उतर गए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रसंघ भवन पर विरोध प्रदर्शन कर आरोपियों को सख्त सजा देने की मांग की गई।

महिला सुरक्षा की गारंटी पर सवालः दिशा छात्र संगठन के चंद्रप्रकाश ने कहा कि देशभर में महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराध में लगातार वृद्धि हो रही है। इस घटना से न केवल शासन–प्रशासन की श्महिला सुरक्षा की गारंटीश की पोल खुलती है बल्कि इससे यह भी पता चलता है कि दूसरों की जान बचाने वाली लेडी डॉक्टर किस तरह के असुरक्षित माहौल में काम करने को मजबूर हैं। समाज में पसरी सांस्कृतिक पतनशीलता नये बलात्कारियों और हत्यारों को बदस्तूर पैदा करती रहेगी और बलात्कारी मानसिकता को खुराक व सुरक्षा देती रहेगी। इस बीच आरजी मेडिकल कॉलेज जैसे जघन्य कांडों के नये–नये मामले हमारे सामने आते रहेंगे। महेश, नीरज, अविनाश आदि ने समर्थन किया।

प्रयागराज के युवक की पटियाला में मौत

मेजा। प्रयागराज के मांडा थाना क्षेत्र के दीघीया गांव में मातम का माहौल है। गांव के एक युवक की पटियाला में रेल कोच से

दबकर दर्दनाक मौत हो गई। जिससे पूरे परिवार में कोहराम मच गया है। मृतक रजनीश कुमार दुबे (30) ने अपने पिता की मृत्यु के बाद केवल आठ महीने पहले ही रेलवे में नौकरी पाई थी। पिता की जगह पर नौकरी मिलने के बाद रजनीश की पटियाला में नियुक्ति हुई थी। मिली जानकारी के अनुसार, बीती रात लगभग आठ बजे के आसपास रजनीश की रेल कोच से काम के दौरान दबकर मौत हो गई।

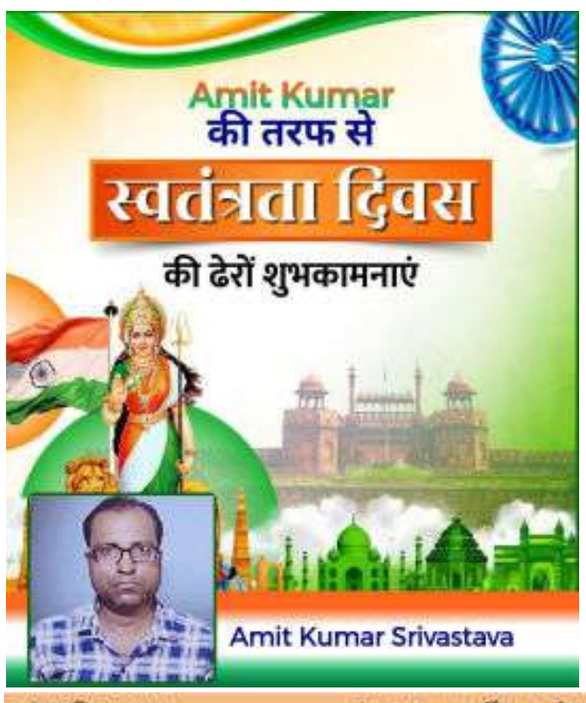

वजूखाने का सर्वेक्षण कराने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई टली, अब 22 अगस्त को होगी जिरह

प्रयागराज। ज्ञानवापी स्थित वजूखाने का एएसआई से सर्वेक्षण कराने की मांग वाली याचिका पर बुधवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट में सुनवाई नहीं हो सकी। अब मामले की अगली सुनवाई 22 अगस्त को तय की गई है। इस केस की सुनवाई रोहित रंजन अग्रवाल की सिंगल बेंच कर रही है। इंतेजामिया मसाजिद कमेटी के वकील के बीमार होने के कारण मामले की सुनवाई अगली तिथि तक के लिए टाल दी गई है। बता दें कि पिछली सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट में वाराणसी के ज्ञानवापी स्थित वजूखाना की एएसआई जांच की मांग याचिका पर सुनवाई हुई थी। इस दौरान कोर्ट ने याची अधिवक्ता से पूछा था कि वजूखाना का एएसआई सर्वे क्यों कराना चाहते हैं? याची अधिवक्ता ने दलील दी थी कि कथित ज्ञानवापी मस्जिद के धार्मिक चरित्र के निर्धारण के लिए वजूखाना की एएसआई सर्वे जरूरी है। कोर्ट ने इस मामले में अंजुमन इंतजामिया मस्जिद समिति से काउंटर दाखिल करने के लिए कहा था। अधिवक्ता सौरभ तिवारी, विकास कुमार व अमिताभ त्रिवेदी ने पक्ष रखा। मामले में याची अधिवक्ता ने दलील दी कि सुप्रीम कोर्ट ने 17 मई 2022 के आदेश से वजूखाना क्षेत्र को सुरक्षित और संरक्षित करने का आदेश दिया है, सील नहीं किया है। इसलिए इसकी जांच की

जा सकती है। विवादित स्थल में शिवलिंग मिला है। इसलिए वजूखाना की एएसआई जांच जरूरी है, ताकि ट्रायल कोर्ट के समक्ष विवादित स्थल के धार्मिक चरित्र का निर्धारण हो सके। कोर्ट ने कहा था कि एएसआई ने पहले ही ज्ञानवापी परिसर की जांच की हुई है। उस रिपोर्ट को देखिए। इसके बाद बताइए कि रिपोर्ट में ऐसा क्या है, जिसके आधार पर वजूखाना की एएसआई जांच कराई जानी चाहिए। वहीं कोर्ट ने एएसआई के वकील से पूछा था आपकी जांच में क्या मिला है? अधिवक्ता ने कहा कि रिपोर्ट दाखिल की गई है। कोर्ट के आदेश का अनुपालन किया जाएगा। वहीं, अंजुमन इंतजामिया मस्जिद समिति के अधिवक्ता जहीर असगर को जवाब दाखिल करने के लिए कोर्ट ने चार सप्ताह का समय दिया था और सुनवाई के लिए अगली तिथि 14 अगस्त निर्धारित की थी।

एएसआई जांच की मांग जिला न्यायालय ने की है खारिज : वजजखाना क्षेत्र की भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) जांच की मांग जिला न्यायाधीश ने 21 अक्तूबर 2023 के आदेश से खारिज कर दी है। इस आदेश को राखी सिंह ने पुनरीक्षण याचिका दायर कर चुनौती दी है। उनका कहना कि इस जांच से वादी और प्रतिवादी दोनों पक्षों को लाभ होगा।

35 साल से फूलपुर सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी जमानत तक नहीं बचा सके, 1985 में आखिरी बार मिली थी जीत

प्रयागराज। भाजपा सांसद प्रवीण पटेल के इस्तीफे के बाद रिक्त हुई है फूलपुर विधानसभा सीटप्रयागराज। इंडिया गठबंधन की सहयोगी कांग्रेस ने फूलपुर विधानसभा सीट पर दावा बेशक ठोका है, लेकिन उसकी दलीलें बहुत दमदार नहीं दिख रहीं। नेहरू–गांधी परिवार की पारंपरिक सीट बताकर कांग्रेस नेता इस सीट पर पार्टी के मजबूत होने की दुहाई दे रहे हैं। लेकिन, हकीकत यह है कि कांग्रेस यहां आखिरी बार 1985 में जीती थी। फिर, एक बार छोड़ दें तो 35 साल से प्रत्याशी जमानत तक नहीं बचा सके।

CBC 10401/11/0005/2425

लोकपाल मनरेगा प्रतापगढ़ को शासन द्वारा सी यू जी नंबर 8188067730 आवंटित

प्रशिक्षण से लौटे समाज शेखर

प्रतापगढ़स लोकपाल मनरेगा समाज शेखर सहित प्रदेश के नव चयनित लोकपालो का प्रशिक्षण कार्यक्रम लखनऊ स्थित

जवाहर भवन में ग्राम्य विकास विभाग में हुआ। विषय विशेषज्ञों ने तकनीकी व बारीकियो से अवगत कराया। मनरेगा लोकपालो को ग्राम्य विकास विभाग द्वारा सीयूजी नंबर नंबर आवंटित किया गया। जिसमे प्रतापगढ़ के लोकपाल समाज शेखर को मोबाइल नंबर 8188067730 आवंटित किया गया । लोकपाल समाज शेखर ने सभी से इस मोबाइल नंबर पर मनरेगा से जुड़ी भ्रष्टाचार की समस्या के सम्बन्ध में शिकायत व संपर्क करने हेतु अपील की है।

उन्होंने कहा की सप्ताह में दो दिन जनसुनवाई की तिथि व समय तय कर सार्वजनिक रूप से अवगत करा दिया जायेगा। जिससे शिकायतों के गुणवत्ता पूर्ण निवारण में निर्णायक भूमिका निभाई जा सकेगी।

कुछ इस तरह 78वाँ स्वतन्त्रता दिवस मनाएँगे

डॉ०प्रदीप चित्रांशी

प्रयागराज। स्वतन्त्रता दिवस की बात है।हमेशा की तरह आज भी मैं सुबह अपनी छोटी सी वाटिका में बेला और गुलाब की खुश्बुओं के बीच चाय की चुस्कियों का आनन्द ले रहा था,उसी समय कुछ रंग–विरंगी तितलियाँ अपने पंखों को फैलाकर फूलों से अठखेली करती हुई, कुछ इस तरह उड़ने लगीं कि कुछ ही पल में लाल

रंग वाली तितलियाँ ऊपर, सफेद रंग वाली बीच में तथा हरे रंग की उसके नीचे आकर उड़ने लगीं। तितलियों का यह झुण्ड कभी ऊपर,कभी नीचे ,कभी फूलों के पास,कभी फूलों से दूर उड़ते देख, मुझे ऐसा आभास होने लगा कि आज पन्द्रह अगस्त को तितलियाँ भी मगन होकर तिरंगा फहरा कर रही हैं। इस सुहावने दृश्य को देखकर मन बाग–बाग हो उठा।मुझे लगा कि ये तितलियाँ ,घर–घर तिरंगा फहराने का संदेश लेकर फिजाओं में भी जय हिंद, वन्देमातरम लिख रही हैं। तितलियों के इसी अनोखे उत्साह को याद करके, मेरे मन में पुनरू 78वां स्वतन्त्रता दिवस अपने ही घर में मनाने का खय्याल हिचकोले लेने लगा।

खय्याल आते ही बाजार जाकर तिरंगे को अपने घर ले आया।तिरंगा आते ही पूरे घर में खुशी का माहौल छा गया। जल्दी–जल्दी सब लोग नहा–धोकर तैयार हो गए। सब लोगों ने तय किया कि दादा जी छत पर ध्वज फहराएँगे तथा सन्तू चाचा ,जब बच्चे राष्ट्रीय गान गाएँगे, उस समय वाद्ययंत्र बजाएँगे। ध्वजारोहण के बाद सभी बच्चे श्स्वतंत्रता कैसे मिलीश पर अपने–अपने विचार रखेंगे तथा इसके बाद सब लोग भोजन ग्रहण करेंगे। भोजनोपरान्त दादा जी बच्चों को आजादी के दीवानों की कहानी सुनाएँगे ,जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर, हमें आजाद देश में रहने का गौरव प्रदान किया है।अन्त में पूरा परिवार यह संकल्प लेगा कि देश की आजादी के लिए जिन लोगों ने अपनी कुर्बानी दी है, उनकी कुर्बानी को हम याद कर देशहितमें काम करेंगे।तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार ही हमलोग 78वाँ स्वतन्त्रता दिवस मनाएँगे।

केशरवानी समाज ने पोस्टकार्ड के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा

प्रयागराज । जिला केसरवानी वैश्य सभा के तत्वाधान में जिला अध्यक्ष नारायण केसरवानी के नेतृत्व में केशरवानी समाज के पदाधिकारी गण सिविल लाइन स्थित प्रधान डाकघर में उत्तर प्रदेश केसरवानी वैश्य सभा के आवाहन पर केसरवानी समाज को पिछड़ा वर्ग में शामिल करने के लिए केशरवानी समाज म मुख्यमंत्री जी को पोस्ट कार्ड के माध्यम से ज्ञापन भेजा गया।

उक्त अवसर पर राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सतीश चन्द्र केसरवानी ने उत्तर प्रदेश सरकार से मांग करते हुए कहा कि केसरवानी समाज को पिछड़ा वर्ग में जल्द से जल्द शामिल किया जाए।

प्रदेश महामंत्री प्रमिल केसरवानी ने कहा कि बिहार एवं झारखंड में केशरवानी समाज को पिछड़े वर्ग का आरक्षण प्राप्त है इसलिए उत्तर प्रदेश में भी केशरवानी समाज को पिछड़े वर्ग का आरक्षण प्राप्त हो उक्त अवसर पर प्रमुख रूप से राष्ट्रीय संरक्षक शिव कुमार वैश्य, प्रदेश महामंत्री प्रमिल केसरवानी, विनोद कुमार केसरवानी एडोव, रमेश चंद्र केसरवानी, कन्हैया लाल गुप्ता, राजेश केसरवानी, अनिल कुमार केसरवानी, राजेंद्र केसरवानी, सुरेश केसरवानी, सुभाष केसरवानी, आदि लोग उपस्थित रहेस

गङ्गानाथ झा परिसर में महर्षि चरक जयन्ती समारोह का आयोजन

प्रयागराज।केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गङ्गानाथ झा परिसर प्रयागराज एवं विश्व आयुर्वेद मिशन के संयुक्त तत्वावधान में संस्कृत सप्ताह महोत्सव के अन्तर्गत आज दिनांक 14–08–2024 को चरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता परिसर के निदेशक प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी ने की । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि यूनाइटेड इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, प्रयागराज के प्राचार्य प्रो.(डॉ.) मंगल सिंह तथा कार्यक्रम के आयोजन अध्यक्ष प्रो. गिरीन्द्र सिंह तोमर, अध्यक्ष, विश्व आयुर्वेद मिशन रहे। इस अवसर पर प्रो. तोमर ने महर्षि चरक को चिकित्सा विज्ञा के जनक के रूप में अवस्थापित किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने महर्षि चरक के योगदान पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि महर्षि चरक ने योग को चित्त शुद्धि, व्याकरण को वाणी शुद्धि एवं संहिता को

चिकित्सा पद्धति हेतु रचित बताया। मुख्य अतिथि प्रो. मंगल सिंह ने महर्षि चरक के चिकित्सा क्षेत्र में दिये गये योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होने इंटीग्रेटेड (एकीकृत) चिकित्सा पद्धति को अपनाने पर बल दिया। विभिन्न अवसरों पर महर्षि चरक की विचारधारा से प्रेरणा लेकर स्वयं भी चिकित्सा करने के अपने अनुभव से परिचित कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए परिसर के निदेशक प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी ने वाणी की चिकित्सा व्याकरण से करने का वर्णन किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि हमारे देश में उपलब्ध सभी प्रकार की चिकित्सा पद्धति स्वीकार्य है। आवश्यकता इस बात की है कि रोगी की चिकित्सा किस पद्धति से सम्भव है यह चिकित्सक को स्पष्ट रूप से बताने की आवश्यकता है। रोगानुसार उचित चिकित्सापद्धति का परामर्श देना एक योग्य चितित्सक से अपेक्षित है। चिकित्सकीय प्रशिक्षण में भी इसे सम्मिलित करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के सचिव डॉ. अवनीश पाण्डेय, आयुर्वेद चिकित्साधिकारी, उत्तर प्रदेश सरकार ने सभी लोगो से अपने शरीर के प्रति स्वार्थी होने का आह्वान किया। शरीर को रोगमुक्त रखना व्यक्ति का प्रथम कर्तव्य है। इससे पूर्व मुख्य अतिथि का स्वागत परिसर की पाण्डुलिपि विभागाध्यक्षा एवं कार्यक्रम की संयोजक प्रो. अपराजिता मिश्रा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अवनीश पाण्डेय एवं संचालन डा. धीरज कुमार मिश्र ने किया । इस अवसर पर प्रो. देवदत्त सरोदे, डॉ. सुरेश पाण्डेय, डा. रामरूप, डा. श्याम सुन्दर पाण्डेय, डॉ. मोनाली दास, श्री राजेशकान्त तिवारी, सुश्री अश्विनी राजेश लंके, सुश्री शुभश्री दास, अञ्जनी कुमार पुण्डरीक, श्री संजय मिश्र तथा परिसरीय अन्य कर्मचारी गण तथा शोधच्छात्र समुपस्थित रहे।

हर्षोल्लास का पर्व है 15 अगस्त

डॉ वीरेंद्र तिवारी

प्रयागराजस घर में बैठे दृ बैठे मैं पन्द्रह अगस्त के बारे में सोच रहा था कि 15 अगस्त का दिन हम भारतवासियों के लिए अत्यन्त हर्षोल्लास का दिन है , क्योंकि इसी दिन हमारा देश 15 अगस्त , सन् 1947 को विदेशी दासता की बेड़ियों से आजाद हुआ था । कहा भी गया है दृ " पराधीन सुख सपनेहुँ नाहीं " अर्थात् पराधीन होने पर स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता है । सबसे बड़ा सुख स्वतन्त्र या स्वाधीन रहने में है और सबसे बडा दुःख दूसरों के अधीन रहने में है । इस सच्चाई को सभी स्वीकार करते हैं और सभी सुखी रहना चाहते भी हैं । फिर हम परतन्त्र या पराधीन क्यों हो जाते हैं । कुछ लोग कहते हैं कि दूसरा शक्तिशाली या बलवान् व्यक्ति हमें बलपूर्वक अपने अधीन कर लेता है । वस्तुतः यह परिस्थितिजन्य होता है । परिस्थिति देश , काल और पात्र पर निर्भर करती है । भारत की अतुल धन–सम्पदा , काल–चक्र का प्रभाव और मानव मन की दुर्बलता के कारण काम,क्रोध और लोभ आदिकाल विकारों के परिणामस्वरूप उपजे वैमनस्य के कारण हम सदियों पराधीन रहे ।

किसी भी चीज का आत्यन्तिक विनाश नहीं होता है । हमारे भीतर की अच्छाइयों का भी पूर्णतः विनाश नहीं हुआ था ।हमारी सांस्कृतिक चेतना की चिंगारी हृदय में शेष थी । धीरे–धीरे इस चिंगारी ने ज्वाला का रूप धारण कर लिया और सन् 1857 ई. में वह चिंगारी शोला बनकर भड़क उठी । वीर–वीरांगनाओं ने स्वतन्त्रता का संग्राम छेड़ दिया । मंगल पांडे और महारानी जैसे भारत के लालों और ललनाओं ने ऐसी जागृति पैदा कर दी कि बाद में चन्द्रशेखर आजाद . भगत सिंह , राजगुरु , अशफाकुल्ला जैसे असंख्य क्रान्तिकारियों ने निस्स्वार्थ भाव से भारत को स्वतन्त्र कराने का बीड़ा उठा लिया । क्रान्ति का बीज हृदय की भावभूमि में बोया जाता है , जिसके लिए महर्षि अरविन्द जैसे लोगों ने आध्यात्मिक जागरण का भी प्रयास किया । महात्मा गाँधी जैसे लोगों ने नर्म पन्द्रह अपनाया । टैगोर जैसे साहित्यकारों ने हृदय–भूमि को सींचने का प्रयास किया । सुभाष चंद्र बोस , सावरकर , जैसे लोगों ने युद्धभूमि में लड़ने के लिए भी ललकारा । इस कार्य में आशावादी ढेर सारे नर–नारियों ने हर सम्भव प्रयास किया । तब जाकर 15 अगस्त , 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ ।

स्वतन्त्रता दिवस के पावन पर्व के.अवसर तर समूचे देश में उत्सव का माहौल रहता है , किन्तु साथ ही साथ अन्तर्मन में एक टीस भी उभरती है । स्वतन्त्रता–प्राप्ति के लिए असंख्य वीरानियों तथा वीरांगनाओं ने अपने प्राणों की आहुति दी । क्या वे खंडित देश की कल्पना भी किये होंगे ? कदापि नहीं । किन्तु आततायियों ने भारत माता की दोनों भुजाएं काट कर माता को असहाय बनाने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी । कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने निजी हित–साधन में देश को कमजोर करने का निरन्तर प्रयास किया है और आज भी कर रहे हैं । हमें अपना अस्तित्व बचाये रखने के लिए आत्ममंथन करना होगा । क्या हम केवल दूसरों को दोषी ठहराकर विकराल समस्याओं का निराकरण कर पायेंगे ? क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर उठ कर दुश्मनों की चालों से सतर्क रहते हुए अपनी कमियों को भी सुधारना पड़ेगा । 15 अगस्त केवल खुशियाँ मनाने का दिन नहीं है । यह आत्मचिंतन करने का भी दिन है , जिससे हम एक सुदृढ और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कर सकें । स्वाधीनता दिवस पर केवल कैसे हर्षोल्लास मनायें ? डाबर के पानी –सा जल है , कैसे अपनी प्यास बुझाने ? दुश्मन अपनी चाल चलेगा , उसे बनाना सरल कठिन है । अपने ही जब घात करें तो कैसे उनको हम समझाएं ? काम–क्रोध–लोभ का मारा इच्छाओं का दास बना है । अन्धो को सच नहीं दीखता दर्पण कैसे उसे दिखायें ?

उपचुनावः राजभर और अपना दल खाली हाथ

बीजेपी को 7, निषाद पार्टी को 2, रालोद को एक सीट पर मौका

लखनऊ, एजेंसी। उत्तर प्रदेश में दस सीटों पर होने वाले उपचुनाव के लिए एनडीए में सीटों के बंटवारे पर सस्पेंस खत्म होता नजर आ रहा है। राज्य में दस सीटों पर उपचुनाव होने वाला है, अभी तक चुनाव का ऐलान नहीं हुआ है। एनडीए के दलों के बीच सीट बंटवारे को लेकर गुत्थी सुलझ गई है।इसका संकेत निषाद पार्टी प्रमुख और योगी सरकार के मंत्री डॉ. संजय निषाद के बयान के आधार पर मिलने लगे हैं।आज बुधवार को उपचुनाव के संबंध में मीडिया से मुखातिब मंत्री डॉ. संजय निषाद ने कहा, एनडीए मझवा और कटेहरी में निषाद पार्टी के सिंबल पर लड़ेगा। एनडीए 10 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। एनडीए की 2 सीटों पर सहयोगी दल के सदस्य लड़ते हैं ऐसा इतिहास रहा है।हम चाहते हैं कि अधिक से अधिक सीट जीते। जल्द ही 10 सीटों पर प्रभारी नियुक्त किया जाएगा।हम एनडीए को जिताएंगे।उनके बयान से स्पष्ट है, कि जिन दस सीटों पर चुनाव होने वाला है उनमें से दो सीट निषाद पार्टी को मिलेगी। गठबंधन के दल आरएलडी पहले ही पश्चिमी यूपी की सीट मीरापुर में अपनी तैयारी कर रही है।यह सीट आरएलडी विधायक के इस्तीफे के बाद ही खाली हुई है।इस वजह से यहां आरएलडी का उम्मीदवार होना तय माना जा रहा है। एनडीए गठबंधन से सुभासपा को इस चुनाव में एक भी सीट नहीं मिलने के संकेत पहले ही मिल चुके हैं। ऐसे ही संकेत अपना दल एस को लेकर भी हैं, माना जा रहा है कि अपना दल को भी कोई सीट नहीं मिलेगी।बीते दिनों ही जब उपचुनाव के संबंध में सुभासपा प्रमुख और योगी सरकार के मंत्री ओम प्रकाश राजभर टिप्पणी कर रहे थे तो उन्होंने कहा, उपचुनाव में उन्होंने किसी सीट पर अपना दावा नहीं किया है बल्कि वो एनडीए के साथ पूरी ताकत के साथ चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। हम सब एनडीए के सहयोगी पूरी ताकत के साथ चुनाव मैदान में डटे हैं।उधर इंडिया गठबंधन में अभी सीटों पर पेंच फंसा है। कांग्रेस उपचुनाव के लिए पांच सीटें मांग रही है जबकि दूसरी ओर सूत्रों की मानें तो समाजवादी पार्टी गठबंधन में चुनाव लड़ने के लिए तैयार है लेकिन पार्टी गठबंधन के तहत दो से ज्यादा सीट देने के लिए तैयार नहीं है।

केशव प्रसाद मौर्य ने जताया शोक

लखनऊ, एजेंसी। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने पत्रकार अरुणव सिन्हा के पिता तरुण सिन्हा के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।श्री मौर्य ने शोक संतप्त परिजनों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति की कामना की है।

भाषा विश्वविद्यालयः छात्रों ने निकाली तिरंगा रैली, शहीदों के बलिदान को किया नमन

लखनऊ, एजेंसी। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विवि में रोवर्स टीम ने हर घर तिरंगा अभियान का आयोजन किया। इसका कार्यक्रम में कुलपति प्रो.एन.बी.सिंह मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस मौके पर स्वतंत्रता के संघर्ष को याद कर इसके महत्व को उजागर किया गया और काकोरी शहीदों के वीरगाथा को 100 साल पूरे होने पर डॉ. मुन्नवर हुसैन ने छात्रों के बीच विशेष उल्लेख किया। जिसमें विश्वविद्यालय के छात–छात्रा और शिक्षक ने अपनी सहभागिता दर्ज कर शायरी व कविता पाठ और उद्बोधन के माध्यम से राष्ट्रव्यापी आभियान को सफल बनाया। कार्यक्रम का आयोजन प्रभारी रोवर्स डॉ.सिद्धार्थ सुदीप ने किया था। विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. एन.बी सिंह के तत्वाधान में एनएसएस यूनिट चार और पांच द्वारा हर घर तरंगा अभियान के तहत विश्वविद्यालय प्रांगण में तिरंगा रैली निकाली। यह तिरंगा रैली एनएसएस समन्वयक डॉ. नलिनी मिश्रा, डॉ. अभय कृष्णा और डॉ. जफरुल नकी के नेतृत्व में भाषा विश्वविद्यालय के एकेडमिक ब्लॉक से शुरू हुई और देशभक्ति के नारे लगाते हुए विश्वविद्यालय के एडमिन ब्लॉक पर समाप्त हुई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. महेश कुमार ने कहा कि देश का झंडा देश की पहचान है और यह देश के लोगों के लिए सबसे मूल्यवान चीज है, इसलिए इसे दिल और आत्मा से अधिक प्यार करना चाहिए। देश की सेवा करने के लिए हर दम उपस्थित रहना चाहिए और साथ ही पूर्वजों के बलिदान को कभी नहीं भूलना चाहिए। इस रैली में छात्रों को संबोधित करते हुए एनएसएस समन्वयक डॉ. नलिनी मिश्रा ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में इस तिरंगा रैली को निकालने का मुख्य उद्देश्य यह है कि छात्रों के दिलों में देशभक्ति की भावना पैदा की जा सके और उन्हें अपने घरों पर भारतीय ध्वज फहराने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके है। इस तिरंगा रैली के अंतिम चरण में डॉ. अभय कृष्णा ने शिक्षकों, छात्रों और एनएस स्वयंसेवकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि यह झंडा हमें यूं ही नहीं मिला, इसके लिए बलिदानों की एक लंबी शृंखला है, इसकी रक्षा करना और इसका आदर और सम्मान करना हम सब के न केवल जरूरी है बल्कि एक देशभक्त के लिए यह जीवन से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

शिव भजन

छम छम बरसे रे बदरिया
हम तो अइनी भोला दुअरिया
भोला हमरो पे कइदा
आपन दया के नजरिया
भोला हमरो पे कइदा
आपन दया के नजरिया

दादुर बोले पपिहा बोले
बोले री कोयलिया
बरसे घटा घनघोर ई ऊपर
चमके री बिजुरिया
गंगाजल लेवे के खातिर
निकरि गइल कांवरिया
भोला हमरो पे कइदा
आपन दया के नजरिया
भोला हमरो पे कइदा
आपन दया के नजरिया

झुंड झुंड मिली चले भक्तजन
बम बम भोले बोलत हो
दूध दही बेलपाति धतूरा
भांग कनइल फूल लोढत हो
जाइके शिव जी पर चढावैं
मिलि के गंगाजल कै धरिया
भोला हमरो पे कइदा
आपन दया के नजरिया
भोला हमरो पे कइदा
आपन दया के नजरिया

बाबा अंग भभूति रमावैं
जटा गंग को धारैं हो

तन सोहे मृगछाल बाबा के
भंग पियें मतवारें हों
संग बिराजैं गौरां मैया
गिरी कैलाश नगरिया
भोला हमरो पे कइदा
आपन दया के नजरिया
अनामिका शर्मा अनु

हज के आवेदन शुरू, अन्तिम तिथि 9 सितम्बर

प्रयागराज। हज कमेटी आफ इण्डिया के गाइड लाइन के मुताबिक हज–2025 के लिए हज के आवेदन फार्म 13 अगस्त 2024 से शुरू हो गए हैं और 9 सितम्बर 2024 तक भरे जाएंगे।

खुद्दामे हज कमेटी के महासचिव हाजी मोइन अहमद खां ने बताया कि ये फार्म कमेटी के दफ्तर नूरउल्ला रोड स्थित पालकी गेस्ट हाउस में सुबह 11 बजे से दोपहर एक बजे तक और शाम सात बजे से 9 बजे तक भरे जाएंगे। इच्छुक लोग इन्टरनेशनल पासपोर्ट जिसकी वैधता 15 जनवरी 26 तक हो, आधार कार्ड, पैन कार्ड, ब्लड ग्रुप, एक कलर फोटो व्हाइट बैकग्राउन्ड और दो मोबाइल नं० के साथ सम्पर्क कर सकते हैं। हज से सम्बन्धित सारी सेवायें मुफ्त प्रदान की जायेंगी।

बॉलीवुड स्टार थीम वॉक 2के24 सीजन 3 रनवे और अवार्ड शो का आयोजन हुआ

लखनऊ, एजेंसी। एंजल्स कास्टिंग हब और वाईआईएमए इवेंट्स द्वारा आयोजित बॉलीवुड स्टार थीम वॉक 2के24 सीजन 3 रनवे और अवार्ड शो का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। इस आयोजन में बॉलीवुड और फैशन इंडस्ट्री की कई हस्तियों ने शिरकत की और इसे बेहद सफल बनाया। इस भव्य आयोजन के आयोजक थे, सबसे कम उम्र के कास्टिंग निर्देशक मिस्टर अंश और अभिनेत्री एंजेल नीलिमा, जो जी म्यूजिक कंपनी की प्रसिद्धि हैं।

गीत

भारत माता सजी हुई हैं, सिर पर मुकुट विराजा है।
बलिदानों का रक्त याद है, गरम–गरम वह ताजा है।।
इस उमंग में भूल न जाएँ, अपने वीर जवानों को।
खून दे रहे भारत माँ को, अपना फर्ज निभाने को।।
सत्य भाव की शपथ लीजिए, दुश्मन पट्टी गाजा है।
बलिदानों का रक्त याद है, गरम–गरम वह ताजा है।।१।।
भ्रष्ट लोभ से भरे हुए जो, वह क्या देश बचाएँगे!
जाति–पाँति अरु धर्म–ध्वजा से, हमको ही खा जाएँगे।।
सत्ता के जो लोभी नेता, खुद को समझे राजा है।
बलिदानों का रक्त याद है, गरम–गरम वह ताजा है।।२।।
स्वतंत्रता के सेनानायक, अपना धर्म निभा बैठे।
खून बहाते नौजवान पर, सत्ता पर हैं कुछ ऐंठे।।
कफन बाँध लो सिर अपने, रिपु का बजता बाजा है।
बलिदानों का रक्त याद है, गरम–गरम वह ताजा है।।३।।
भारत माता की रक्षा में, जिसने अपने प्राण दिए।
डरे नहीं अंग्रेजों से जो, फंदा फाँसी चूम लिए।।
बलिदानी अरु उस सपूत को, हम तो समझें राजा है।
बलिदानों का रक्त याद है, गरम–गरम वह ताजा है।।४।।
आजादी की रक्षा कर लो, माँ ने हमें पुकारा है।
सिहर रही है, काँप रही है, बिछड़ रही इक धारा है।।
आओ मिलकर इसे बचाएँ, छेल कबड्डी आजा है।
बलिदानों का रक्त याद है, गरम–गरम वह ताजा है।।५।।

गद्दारों की नव पीढ़ी से, हमको देश बचाना है।
आँच न आए भारत माँ पर, गूँजे ऐसा गाना है।।
कविता में भावों को भरकर, कवि ने इसको साजा है।
बलिदानों का रक्त याद है, गरम–गरम वह ताजा है।।६।।

पंडित राकेश मालवीय मुस्कान
प्रयागराज–१६

कोई भूखा ना सोए अपनों की रसोई का शुभआरंभ

प्रतापगढ़। जनपद प्रतापगढ़ के 7 गायघाट रोड दहिलामऊ में आज जरूरतमंदों के लिए अपनों की रसोई का उद्घाटन ईशान प्रमोट आर्ट कल्चर एंड इंप्रूव सोसायटी के तत्वाधान में संस्था की अध्यक्ष श्रीमती गिरिराज देवी सिंह और सचिव अरुण कुमार सिंह द्वारा किया गयास उद्घाटन समारोह में आलोक कुमार सिंह ने बताया कि जरूरतमंद लोगों के लिए उनके द्वारा लगातार भोजन कपड़े आदि का प्रबंध 15 वर्षों से किया जा रहा है सइसी कड़ी में आज संस्था के तत्वाधान में जरूरतमंद लोगों के लिए अपनों की रसोई का संचालन शुरू हुआ जिसमें सड़कों पर घूमने वाले मानसिक रूप से अस्वस्थ लोगों और दिव्यांग लोगों या ऐसे जो निराश्रित है उन्हें प्रतिदिन निःशुल्क भोजन उपलब्ध करने के लिए इस रसोई का शुभारंभ किया गया है जिसमें प्रतिदिन जरूरतमंद लोगों को खोज कर भोजन उपलब्ध कराना है ससंस्था की अध्यक्षता श्रीमती गिरिराज देवी सिंह ने कहा कि हम लोगों को भूख नहीं सोने देंगे सइसके लिए हमें जो कुछ भी करना होगा करेंगे ससंस्था के सचिव अरुण कुमार सिंह ने उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि इस अभियान तो हम जनपद ही नहीं पूरे प्रदेश में आगे आने वाले समय में चलने का प्रयास करेंगे जिससे जरूरतमंद लोगों को भोजन प्राप्त हो सकेस अपनों की रसोई के सह संयोजक बबलू पाल उर्फ उमेश पाल ने कहा कि हमारा यह अभियान निरंतर चलता रहेगा जिसे जरूरमंद लोगों को भोजन उपलब्ध हो सकेस इस मौके पर उपसचिव आशीष कुमार सिंह संस्था के विधिक सलाहकार समुद्रगुप्त मिश्र ज्ञान प्रकाश विश्वकर्मा एडवोकेट अनामिका सिंह प्राची बघेल अभिषेक कुमार सिंह ईशान्वी प्रणव राघवी आदि लोग उपस्थित रहे।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत मऊ में रैली निकाली गई

मऊ। आज बालिका इंटर कॉलेज मऊ चित्रकूट के द्वारा मऊ नगर पंचायत में बड़ी धूमधाम के साथ रैली निकाली गई। इस रैली के माध्यम से नगर वासियों को हर घर तिरंगा अभियान के विषय में जागरूक किया गया। उनसे अपील की गई कि वह 15 अगस्त 2024 तक अपने घर पर तिरंगा लहरा कर राष्ट्रीय एकता को संदेश दें। रैली के प्रारंभ में प्रधानाचार्य श्री अरुण कुमार द्विवेदी ने सभी को हर घर तिरंगा अभियान के विषय में जानकारी प्रदान की कि जिनके घर पर अभी तक तिरंगा नहीं लगाया गया है उनको तिरंगा झंडा प्रदान किया गया जिससे वह जाकर अपने घर पर तिरंगा लहरा सके रैली के दौरान कॉलेज के सभी शिक्षक,शिक्षिकाएं व छात्राएं मौजूद थी। पूर्व प्रबंधक श्री सुंदरलाल सुमन ने महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर तिरंगा रैली का स्वागत किया। इस दौरान प्रोफेसर डॉ एस कुरील भी मौजूद थे।

तिरंगा रैली के पश्चात कॉलेज परिसर में क्षेत्रीय वन अधिकारी बरगढ़ श्री राणा प्रताप सिंह की उपस्थिति में पौधारोपण किया गया। वृक्षारोपण अभियान के तहत कॉलेज के संरक्षक श्री सुंदरलाल सुमन, प्रोफेसर डॉ. एस कुरील,प्रधानाचार्य श्री अरुण कुमार द्विवेदी व कॉलेज के सभी शिक्षक शिक्षिकाएं तथा छात्राएं उपस्थित थी।

सम्पादकीय........

जलवायु अनुकूल फसलें

यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि जलवायु परिवर्तन के चलते पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों से हमारी खाद्य शृंखला को खतरा पैदा हो गया है। मानसून के पैटर्न में बदलाव, घातक गर्मी की लहरों, समुद्री जलस्तर में वृद्धि तथा आये दिन आने वाले समुद्री तूफान कृषि उत्पादन के लिये संकट पैदा कर रहे हैं। इस बाबत इंटर गवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज की हालिया रिपोर्ट में खतरों के प्रति चेताया गया है। निश्चित रूप से जलवायु परिवर्तन के घातक प्रभावों ने हमारे खेत–खलिहानों में दस्तक दे दी है, जिसका मुकाबला नई रणनीति बनाकर किया जा सकता है। आशंका जतायी जा रही है कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से कृषि के क्षेत्र व फसलों की पैदावार में भारी कमी आ सकती है। खासकर छोटे किसानों के लिये यह संकट बड़ा है जो पूरी तरह से मानसूनी वर्षा पर ही निर्भर रहते हैं। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि इन विषम परिस्थितियों में पैदावार को अक्षुण्ण रखने के लिये विशेष उपक्रम किये जाएं। इस दिशा में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने एक दशक पहले जलवायु अनुकूल खेती में नवाचारों को लेकर अपनी परियोजना शुरू की थी। हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा कई अधिक उपज वाली जलवायु अनुकूल फसलों की किस्मों का शुभारंभ करना इसी कड़ी का हिस्सा है। इस बाबत सरकार का कहना है कि अधिक पैदावार वाली गेहूं के बीजों की किस्मों को सफलता पूर्वक तैयार करने के बाद जलवायु प्रतिरोधी बीजों के साथ धान का रकबा बढ़ाना उसकी प्राथमिकता है। निस्संदेह, इस विकट पर्यावरणीय चुनौती का मुकाबला हम निरंतर स्वदेशी समाधानों के जरिये ही कर सकते हैं। जिसमें निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देने की जरूरत महसूस की जा रही है। निस्संदेह, देश में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन के लिये चलाये जा रहे कार्यक्रमों की कोई कमी नहीं है,लेकिन जरूरत इस बात की है कि उपलब्ध संसाधनों के विवेकपूर्ण प्रबंधन को बढ़ावा दिया जाए। निस्संदेह, जलवायु परिवर्तन के घातक प्रभावों से कृषि उत्पादन को संरक्षण देने और किसानों के हितों की रक्षा के लिये संसाधनों का बेहतर उपयोग बेहद जरूरी है। इसके साथ ही जल स्रोतों का संरक्षण, वन क्षेत्र की रक्षा, मृदा स्वास्थ्य कार्ड जैसी योजनाओं के जरिये भूमि की उर्वरता बढ़ाने का उपक्रम भी करने की दरकार है। हमें खेती में कृत्रिम खादों के उपयोग में भी संयम बरतना चाहिये। इसी कड़ी में फसलों के विविधीकरण कार्यक्रम को भी गति देने की आवश्यकता है। इसके लिये किसानों को जागरूक और प्रोत्साहित करने की जरूरत है। यह सुखद है कि देश के कई राज्यों में व्यापक पैमाने पर जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। लेकिन इस कार्यक्रम को राष्ट्रव्यापी बनाया जाना चाहिये। इस दिशा में प्रोत्साहन योजनाएं किसानों का जैविक खेती अपनाने का मार्ग प्रशस्त कर सकती हैं। एक तथ्य यह भी कि इस दिशा में नई प्रौद्योगिकी तैयार कर लेने मात्र से ही समस्या का समाधान संभव नहीं है। जरूरत इस बात की है कि वैज्ञानिक अनुसंधानों को खेतों तक पहुंचाया जाए। किसान सहजता से उनका उपयोग करते हुए फसलों के संरक्षण को गति दे सके। दरअसल, किसान को व्यावहारिक रूप से संतुष्ट करना जरूरी भी है कि उसके लिये वास्तव में क्या उपयोगी है। देश में किसानों को जलवायु अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिये देशव्यापी सहमति बनाने की जरूरत है। इसके लिये आधुनिक अनुसंधान के साथ ही अनुभवजन्य अध्ययन को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए। सही मायनों में इन प्रयासों को गति देने के लिये अनुसंधान हेतु पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने तथा खेती के लिये उपयोगी निष्कर्षों को किसानों तक पहुंचाने की भी जरूरत है। लगातार भयावह होते परिदृश्य में इस चुनौती को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में शामिल करने की आवश्यकता है। इस हकीकत को जानते हुए कि हम दुनिया की सबसे ज्यादा आबादी वाले देश हैं। एक बड़ी आबादी की सामाजिक सुरक्षा के लिये तमाम खाद्यान्न योजनाओं में सरकारी अन्न भंडारों के जरिये चलायी जा रही हैं। जिसकी पूर्ति खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाकर ही की जा सकती है। यह तभी संभव है जब हमारी कृषि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का मुकाबला करने में सक्षम हो।

पेरिस ओलिम्पिक का खट्टा-मीठा समापन

एजेंसी

भारत में खिलाड़ियों के पास जज्बा और काबिलियत तो है, लेकिन सरकारें निराश करती है। खेलों को गम्भीरता से लेने वाले राज्यों की संख्या गिनाने के लिये एक हाथ की उंगलियां भी काफी हैं।

फ्रांस की राजधानी पेरिस में 26 जुलाई को प्रारम्भ हुए 33वें ओलिम्पिक खेलों का समापन रविवार को हुआ। 126 पदकों के साथ अमेरिका (40 स्वर्ण) प्रथम, चीन दूसरे तथा जापान तीसरे क्रमांक पर रहा। 140 करोड़ की जनसंख्या वाले भारत ने पिछले टोक्यो ओलिम्पिक में कुल 6 मेडल पाये थे, लेकिन उसमें एक गोल्ड था। इस बार भी उसे कुल जमा 6 ही मिले– एक रजत और 5 कांस्य। उसका क्रमांक 71 रहा। छोटे–बड़े 62 देश ऐसे हैं जिन्हें कम से कम एक स्वर्ण पदक अवश्य मिला है। मनु भाकर एकमेव ऐसी खिलाड़ी रहीं जिन्होंने दो पदक पाये। एकमात्र रजत नीरज चोपड़ा को मिला जिन्होंने पिछली प्रतियोगिता में स्वर्ण जीता था। नीरज इस बार अपने परम्परागत प्रतिस्पर्धी अरशद नदीम (पाकिस्तान) से आगे भाला फेंक नहीं पाये। भारत के प्रदर्शन ने फिर साबित कर दिया कि खेल शक्ति बनने के लिये देश का आकार या जनसंख्या जिम्मेदार नहीं बल्कि सरकारों का रवैया, समाज का नजरिया, खिलाड़ियों को मिलने वाला समर्थन व सम्मान, संसाधनों व सुविधाओं की उपलब्धता जैसे तथ्य मुख्य कारक होते हैं। पदक तालिका में शीर्ष पर खड़े अमेरिका की जनसंख्या भारत के मध्य वर्ग के बराबर भी नहीं है, तो वहीं दूसरे क्रमांक पर भारत से आकार में काफी छोटा जापान है। चीन तीसरे स्थान पर है जो भारत की ही तरह बड़ी आबादी तथा विशाल भूभाग वाला देश है। जज्बा– बस यही मायने रखता है। फिर चाहे वह देश का हो या खिलाड़ियों का। भारत में खिलाड़ियों के पास जज्बा और काबिलियत तो है, लेकिन सरकारें निराश करती है। खेलों को गम्भीरता से लेने वाले राज्यों की संख्या गिनाने के लिये एक हाथ की उंगलियां भी काफी हैं। शेष औपचारिकता निभाते हैं और इस क्षेत्र को भी अपनी सियासत का अखाड़ा मानते हैं। सत्ता से जुड़े लोग खेल संगठनों पर काबिज हैं। जिस संगठन की सरकार से जितनी निकटता होगी वह सरकार से उतना ही अनुदान खींच लाता है शासन से सहूलियतें जुटाई जाती हैं, अध्ययन के नाम पर विदेशी दौरे होते हैं, प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों के अनुपात में बड़ा सा अधिकारियों का दल होता है। टूर्नामेंट के प्रदर्शनों का विश्लेषण नहीं होता, न ही खर्चों की समीक्षा होती है। ओलिम्पिक हों या कोई और स्पर्धा, लौटने पर खराब प्रदर्शन के लिये थोड़ी–बहुत शिकायतें होती हैं या आलोचना होती है, वह भी खिलाड़ियों की। सरकारें, खेल संगठन एवं अधिकारीगण बच निकलते हैं। ऐसे राज्य जो ढंग के दो खिलाड़ी भी पैदा नहीं करते, वे खेल मंत्रालय से करोड़ों रूपये उठा लाते हैं। जिन कथित पिछड़े राज्यों में खिलाड़ियों को विकसित करने की असीम सम्भावना होती है वहां के खिलाड़ी और संगठन पाई–पाई को तरसते हैं। खैर, ये वे ही पुरानी बातें हैं जो पिछले हर ओलिम्पिक के बाद भारत में कही और दोहराई जाती हैं। इस बार के ओलिम्पिक ने तो यह बताया है कि लोगों में सरकार अगर भेद–भाव और नफरत के बीज बो दे तो उसकी कंटीली शाखाएं हर जगह पर उग आती हैं। इसके कारण खेल का क्षेत्र कैसा विषाक्त बन जाता है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण पेरिस ओलिम्पिक भारत को दिखा गया। देश का प्रतिनिधित्व करने वाली विनेश फोगाट ने एक ही दिन में कुश्ती के तीन मुकाबले जीत लिये थे और स्वर्ण पदक पहुंच में था। अंतिम मुकाबले के पहले उनका वजन 100 ग्राम अधिक पाया गया। बाहर हो गईं। ये वही विनेश हैं जिन्होंने कुश्ती महासंघ के तत्कालीन अध्यक्ष ब्रजभूषण शरण सिंह के खिलाफ इस आरोप के साथ मोर्चा खोला था कि ब्रजभूषण द्वारा उनके समेत कई महिला पहलवानों का उत्पीड़न किया गया है। इसे लेकर देश भर के पहलवानों एवं महिला सम्मान के पक्ष में खड़े लोगों ने दिल्ली और कई जगहों पर प्रदर्शन किये थे। दिल्ली में इनके साथ पुलिस ज्यादतियां भी हुईं। विनेश के साथ साक्षी मलिक, बजरंग पुनिया आदि विशेष प्रताड़ित किये गये। ब्रजभूषण को उनके गोंडा लोकसभा क्षेत्र से इसी प्रकरण के चलते इस बार टिकट नहीं दिया गया था, लेकिन उनके पुत्र करण भूषण सिंह जीत आये। अपने खिलाफ चले आंदोलन की रत्ती भर परवाह न करते हुए ब्रजभूषण पहले भी कह चुके थे–दबदबा है और दबदबा रहेगा।श 55 किलो केटेगरी में खेलने वाली विनेश को क्यों 50 किलोग्राम श्रेणी में उतारा गया और कैसे दल के पास खान–पान विशेषज्ञों के रहते उनका वजन बढ़ा, इसका जवाब भी उसी दबदबे में छिपा हुआ हो सकता है। उसकी ओर विनेश ने पहले ही अंदेशा जताया था कि उनके साथ कुछ भी हो सकता है। घोर निराशा में विनेश ने संन्यास की यह कहकर घोषणा कर दी– श्मैं हार गई, कुश्ती जीत गयी। पेरिस ओलिम्पिक के दौरान हुए इस घटनाक्रम ने भारत से उसकी एक शानदार पहलवान को छीन लिया। ब्रजभूषण के समर्थक और नफरतियों की बांछें खिल गईं तथा वे अपनी ही खिलाड़ी के खिलाफ हो गये। घृणा जो न कराये सो थोड़ा! वैसे नफरत व वर्चस्व भाव से हुई इस घटिया हरकत के बीच प्रेम व खेल भावना की ठंडी बयार भी पेरिस से चलकर भारत और पाकिस्तान तक पहुंची है। नीरज की मां सरोज देवी ने अपने बेटे के रजत को ही गोल्ड बताया और कहा कि श्गोल्ड जिसका है वह भी हमारा बेटा है। ऐसे ही सरहद पार बैठी अरशद की मां रजिया परवीन ने नीरज की जीत के लिये यह कहकर दुआएं की थीं श्वह अरशद का भाई व मित्र होने के नाते उनका बेटा है। देश हाल के वर्षों में काफी कुछ गंवा चुका है लेकिन दो कथित दुश्मन देशों के खिलाड़ियों की प्रतिस्पर्धा में कटुता की बजाये उठी गर्मजोशी जब दो मांओं के दिलों से आशीषें बरसाने वाली घटना बनी, तो लगा कि अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है।

वक्फ विधेयक: सुधार की खाल में सांप्रदायिकता

राजेंद्र शर्मा

आखिरकार, 1995 के वक्फ कानून में संशोधनों के विधेयक को, फिलहाल एक संयुक्त संसदीय समिति को भेज दिया गया है। मोदी सरकार द्वारा प्रस्तावित किसी विधेयक के लिए ऐसे सलूक को, निश्चित रूप से अपवाद ही कहा जाएगा। संसद के पिछले सत्र तक बिना किसी समुचित चर्चा के बल्कि बिना चर्चा के ही, विधेयकों पर संसद से मोहर लगवाने के अपने उतावलेपन के लिए कुख्यात मोदी सरकार का, 18वीं लोकसभा के पहले सत्र में ही वक्फ विधेयक पर शविस्तृत और बहुपक्षीयश चर्चा की जरूरत स्वीकार कर लेना और विधेयक को संयुक्त संसदीय समिति को भेजने के लिए राजी होना, बेशक हाल के आम चुनाव से निकल कर आई सच्चाइयों को प्रतिबिंबित करता है। इससे तो कोई इंकार ही नहीं कर सकता है कि अब संसद में राजनीतिक ताकतों का संतुलन काफी बदला हुआ है। इस बदले हुए संतुलन का ही संकेतक है कि एक ओर सत्ताधारी भाजपा और दूसरी ओर इंडिया गठबंधन के बैनर तले विपक्ष की ताकत, लगभग बराबर है और इन हालात में मुख्यतरू तेलूगू देशमङ्क तथा जनता दल–यूनाइटेड के साथ गठबंधन के बल पर ही, नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री के पद पर पहुंच पाए हैं। जाहिर है कि सत्ता में होते हुए भी भाजपा इन हालात में, खासतौर पर मोदी के राज के पिछले कार्यकाल की तरह, बहुमत की मनमानी चलाने की उम्मीद नहीं कर सकती है। हालांकि, उसके पास सरकार चलाने के लिए जरूरी बहुमत है, फिर भी विपक्ष की बढ़ी हुई ताकत के सामने, यह बहुमत भी मनमानी चलाने के लिए काफी नहीं है। फिर वक्फ विधेयक के खास मामले में, यह सिर्फ बहुमत के लिए जरूरी संख्या का मामला नहीं रह सकता था। तेलुगू देशम और जनता दल–यूनाइटेड ने बेशक, इस विधेयक पर भी कोई भाजपा से खुद को अलग नहीं कर लिया था। सहयोगी पार्टियों का सत्ता पक्ष के लिए ऐसा कोई धर्मसंकट पैदा करना तो दूर रहा, लोकसभा में जदयू के प्रवक्ता ने औपचारिक रूप से इस विधेयक की पैरवी भी की थी। इसके बावजूद, यह कहना सही नहीं होगा कि ये सहयोगी पार्टियां इस विधेयक का कोई बढ़–चढ़कर समर्थन कर रही थीं। उल्टे प्रस्तावित विधेयक की विपक्ष की प्रबल आलोचनाओं से ये पार्टियां साफ तौर पर असहज नजर आ रही थीं और विधेयक की उनके समर्थन के सारे तर्क, बचाव के तर्क थे। वर्ना उनकी दलीलों के पीछे छुपी बेचौनी आसानी से पढ़ी जा सकती थी। और ऐसा होना, इस संशोधन विधेयक के लाए जाने की पूरी कसरत के अर्थ और मंतव्यों के चलते होना स्वाभाविक ही था, जिनको विपक्ष द्वारा बलपूर्वक रेखांकित किया जा रहा था। पहला सवाल तो यही था कि वक्फ कानून में इस तरह के संशोधनों की आवश्यकता ही क्या थी? संबंधित विधेयक लोकसभा में पेश करते हुए, संसदीय कार्यमंत्री तथा अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरण रिजिजू तथा सत्ता पक्ष के अन्य वक्ताओं द्वारा भी इसके तमाम दावे किए जाने के बावजूद कि परामर्श की एक विस्तृत प्रक्रिया से गुजर कर उक्त संशोधन प्रस्ताव तैयार किए गए थे, यह सच किसी से छुपा हुआ नहीं था कि उक्त विधेयक किसी भी तरह की पॉपूलर डिमांड पर नहीं लाया गया था। उल्टे मुस्लिम समुदाय, जिसके धार्मिक आचार के हिस्से के तौर पर दान–पुण्य के कार्य के तौर पर, चल–अचल संपत्तियां वक्फ करने की रिवायत आती है और इन संपत्तियों की समुचित व्यवस्था के लिए ही वक्फ कानून बनाया गया है, और मुस्लिम धार्मिक राय के बड़े हिस्से द्वारा इस पूरी कसरत को गहरे संदेह की नजर से ही देखा जा रहा था। ऐसा भी नहीं है कि वक्फ कानून में संशोधन की इस कसरत की आलोचना करने वाले इसका दावा कर रहे हों कि 1995 का वक्फ कानून अपने आप में कोई आदर्श कानून था और उसमें किसी संशोधन या सुधार की कोई गुंजाइश या आवश्यकता ही नहीं थी। यह तो खैर किसी का भी कहना नहीं था कि वक्फ संबंधी सारी व्यवस्था बहुत ही अच्छी तरह से चल रही थी, जिसमें कोई कमजोरियां या खामियां थी ही नहीं। लेकिन, सबसे पहली बात तो यह कि इस पूरी कसरत के पीछे सत्ताधारी भाजपा की नीयत ही संदेह के घेरे में थी। बेशक, सत्ता पक्ष की ओर से गरीब–मुसलमानों की भलाई की चिंता का जमकर दिखावा किया जा रहा था। वर्तमान व्यवस्था में मुस्लिम महिलाओं के निर्णय प्रक्रियाओं से बाहर ही छूटे रहने पर काफी आंसू बहाए जा रहे थे। वक्फ बोर्डों तथा वक्फ से जुड़ी अन्य संस्थाओं के बेशुमार मामलों–मुकदमों में फंसे होने पर बड़ा अफसोस जताया जा रहा था। और वक्फ की संपत्तियों, विशेष रूप से जमीनों का, मुसलमानों की भलाई के लिए ठीक से उपयोग न हो पाने का, खूब रोना रोया जा रहा था। लेकिन, एक ओर जिस तरह के पैट्रनाइजिंग सुर में और दूसरी ओर, मुस्लिम समुदाय की संस्थाओं व समुदाय के नेताओं के प्रति हिकारत के सुर में, ये सारी दलीलें दी जा रही थीं, उनसे कोई समझ सकता था कि इस कसरत के पीछे कम से कम मुसलमानों का भला करने की इच्छा नहीं थी। उल्टे जिस तरह से प्रस्तावित संशोधनों के जरिए, सुधार के नाम पर वास्तव में वक्फ की संपत्तियों पर केंद्र सरकार के नियमनकारी नियंत्रण को उल्लेखनीय तरीके से बढ़ाने की कोशिश की जा रही था, वह किसी से भी छुपा नहीं रहा। वक्फ की संपत्तियों के रिकार्डों को चुस्त–दुरुस्त बनाने के नाम पर, न सिर्फ वक्फ संपत्तियों के लिए एक केंद्रीय रजिस्ट्रेशन व्यवस्था का प्रस्ताव किया गया है बल्कि इन संपत्तियों के संबंध में तमाम जानकारियां नया कानून बनने के छरू महीने के अंदर–अंदर अपलोड किए जाने तथा तमाम नयी वक्फ संपत्तियों का रजिस्ट्रेशन उक्त पोर्टल के जरिए ही वक्फ बोर्डों के सामने पेश किए जाने के तकनीकी रूप से उन्नत किए जाने के नजर आने वाले किंतु वास्तव में सब कुछ ज्यादा केंद्रीयकृत करने वाले प्रावधान किए गए हैं। लेकिन, इससे भी ज्यादा समस्यापूर्ण तरीके से पुराने कानून की उस धारा–40 को हटा दिया गया है, जिसके तहत वक्फ ट्रिब्यूनलों को यह तय करने का अधिकार होता था कि क्या कोई संपत्ति वक्फ होने लायक है। ट्रिब्यूनलों की जगह पर, अब जिला कलेक्टर को ऐसे मामलों में अंतिम निर्णयकर्ता बना दिया गया है। और जब तक कलेक्टर द्वारा संबंधित संपत्ति के वक्फ लायक होने की अंतिम रिपोर्ट सरकार को नहीं दे दी जाती है, संबंधित संपत्ति को वक्फ संपत्ति की तरह नहीं बरता जा सकेगा। इसका अर्थ यह है कि जब तक कि सरकार मामले का फैसला नहीं कर देती है, वक्फ बोर्ड ऐसी किसी संपत्ति का नियंत्रण नहीं ले सकता है। इसके साथ ही, संशोधन प्रस्तावों के जरिए केंद्र सरकार को शकिसी भी वक्फ का, कभी भी ऑडिट किए जाने का निर्देश देनेश का अधिकार दे दिया गया है। वक्फ बोर्डों पर लगाई गई इसकी शर्त के ऊपर से है कि राज्य सरकारों द्वारा तैयार किए गए ऑडिटरों के पैनल में से किसी ऑडिटर से हर साल अपने खातों का ऑडिट कराएंगे। उपयुक्त खाते नहीं रखने पर मुतवल्लियों पर जुर्माने भी लगाए जा सकेंगे। केंद्रीयकरण के ऐसे ही एक और कदम में, वक्फ ट्रिब्यूनलों को अब तीन सदस्यीय निकाय के बजाय, सिफ दो सदस्यीय निकाय बना दिया जाएगा। इसके ऊपर से अब ट्रिब्यूनल में एक जिला जज होगा और दूसरा सदस्य, राज्य सरकार में ज्वाइंट सेक्रेटरी की रैंक का अधिकारी होगा। इसके बावजूद, अब वक्फ ट्रिब्यूनलों के निर्णयों की अंतिमता खत्म हो जाएगी और कोई भी पीड़ित पक्ष, इन निर्णयों के खिलाफ सीधे हाई कोर्ट में अपील कर सकेगा। विवादित संपत्तियों के कलेक्टर के अंतिम रिपोर्ट न देने तक वक्फ न माने जाने के साथ जुड़कर, ट्रिब्यूनल के निर्णय की अंतिमता खत्म करने की व्यवस्था, वक्फ की व्यवस्था को ही अस्थिर करने का काम करेगी। इससे भी ज्यादा समस्यापूर्ण यह है कि अब वक्फ की परिभाषा को ही बदल दिया गया है। अब संपत्ति का कोई कानूनी मालिक ही, औपचारिक डीड के जरिए संपत्ति वक्फ कर सकेगा, वह भी तब जबकि वह शकम से कम पांच साल से इस्लाम का पालन कर रहा हो। महत्वपूर्ण है कि इन संशोधनों के जरिए श्उपयोग के जरिए वक्फश के विचार को खत्म ही कर दिया गया, जो इसकी इजाजत देता था कि इस रूप में उपयोग होता आ रहा होने के आधार पर किसी संपत्ति को वक्फ मान लिया जाए, भले ही उसकी मूल डीड विवादित हो। परंपरागत रूप से अक्सर वक्फ की जाने वाली संपत्तियां मौखिक रूप से ही इसके लिए समर्पित की जाती थीं और औपचारिक दस्तावेजीकरण काफी बाद में ही आया है।

विचाराधीन कैदियों के अधिकारों के हनन का सवाल

के रवींद्रन

जब भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ कहते हैं कि लोग हमारी अदालतों के काम करने के तरीके से तंग आ चुके हैं, तो न्यायिक प्रणाली पर इससे अधिक गंभीर आरोप और क्या हो सकता है! उनका यह दावा कि न्यायपालिका को केवल न्यायाधीशों द्वारा न्यायाधीशों के लिए संचालित होने वाली संस्था नहीं होना चाहिए, एक महत्वपूर्ण आलोचना है जो भारत के कानूनी ढांचे के भीतर प्रणालीगत मुद्दों को रेखांकित करती है। यह दृष्टिकोण केवल व्यक्तिगत असंतोष का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि एक अवलोकन है जो समय के साथ सर्वोच्च न्यायालय के विभिन्न निर्णयों और टिप्पणियों में प्रतिध्वनित हुआ है। पिछले सप्ताह सर्वोच्च न्यायालय में सप्ताह भर चलने वाली विशेष लोक अदालत के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में की गई मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ की टिप्पणी, अदालत की हालिया कार्रवाइयों और टिप्पणियों के संदर्भ में विशेष रूप से मार्मिक है। हाल ही में, सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को त्वरित सुनवाई के अधिकार से वंचित करने की कड़ी आलोचना की, जो एक कानूनी लड़ाई में उलझे हुए हैं, जिसने काफी ध्यान आकर्षित किया था। उनके मामले ने मीडिया में महत्वपूर्ण कवरेज प्राप्त करने के साथ–साथ व्यापक प्रणालीगत मुद्दों का एक उदाहरण भी प्रस्तुत किया। इसलिए, सुप्रीम कोर्ट का निर्णय केवल उनके व्यक्तिगत अधिकारों के बारे में नहीं है, बल्कि न्यायिक प्रक्रिया पर एक व्यापक टिप्पणी भी है। सिसोदिया, बेशक, एक हाई–प्रोफाइल व्यक्ति हैं, लेकिन भारतीय जेलों में बंद लाखों गुमनाम विचाराधीन कैदियों की दुर्दशा पर विचार करें, जो या तो उचित सुनवाई के बिना या जमानत हासिल करने के साधनों के बिना जेल में हैं। उनमें से अधिकांश, अक्सर वंचित पृष्ठभूमि से आते हैं, तथा खुद को कानूनी अधर में फंसा हुआ पाते हैं। उनके मामले अनिश्चित काल के लिए विलंबित हो जाते हैं। यह स्थिति इस बात की स्पष्ट याद दिलाती है कि न्यायिक प्रणाली की विफलताएं उन लोगों को कैसे प्रभावित करती हैं जिनके पास तत्काल न्यायिक हस्तक्षेप को आकर्षित करने के लिए संसाधन या बुद्धि की कमी होती है। विचाराधीन कैदियों का मुद्दा कोई नया नहीं है, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय की हालिया टिप्पणियों और निर्णयों के कारण इस पर फिर से ध्यान गया है। कई मामलों में, विचाराधीन कैदी अपने मुकदमों की सुनवाई शुरू हुए बिना ही लंबे समय तक जेल में रहते हैं, जो न्याय वितरण प्रणाली में एक महत्वपूर्ण दोष को उजागर करता है। न्यायिक प्रक्रिया में देरी, न्यायिक कर्मियों की कमी और प्रणालीगत अक्षमताओं के कारण यह समस्या और भी बढ़ जाती है, जो मामलों के समय पर निर्णय को रोकती हैं। इस संदर्भ में, मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ की टिप्पणी सुधार की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को दर्शाती है। न्यायिक प्रणाली, जैसा कि यह है, अपनी प्रक्रियात्मक देरी और अक्षमताओं के बोझ तले संघर्ष करती हुई प्रतीत होती है। आलोचना केवल व्यक्तिगत अधिकारों के बारे में नहीं है, बल्कि समय पर न्याय देने में प्रणालीगत विफलता के बारे में है। व्यापक निहितार्थ महत्वपूर्ण हैं। वह प्रणालीगत बदलाव की आवश्यकता की ओर इशारा करते हैं, जिसमें न केवल प्रक्रियागत देरी बल्कि अंतर्निहित अक्षमताएं भी शामिल हैं जो प्रणाली को प्रभावित करती हैं। न्यायपालिका की भूमिका केवल निर्णय देना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि न्याय निष्पक्ष और शीघ्रता से दिया जाये। जब प्रणालीगत मुद्दे इस भूमिका को कमजोर करते हैं, तो यह न्यायिक प्रक्रिया में जनता के विश्वास और भरोसे को खत्म कर देता है। न्यायपालिका को एक ऐसी संस्था बनने का प्रयास करना चाहिए जो सभी के लिए न्याय के सिद्धांतों को कायम रखे, न कि केवल एक निकाय जो अपने स्वयं के प्रक्रियात्मक ढांचे के दायरे में काम करता है। ध्यान इस ओर केंद्रित होना चाहिए कि प्रणाली को सभी व्यक्तियों की जरूरतों के लिए अधिक सुलभ, कुशल और उत्तरदायी बनाया जाये, चाहे उनकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। निस्संदेह, न्यायिक प्रणाली के सामने आने वाली चुनौतियां जटिल और बहुआयामी हैं। उन्हें तत्काल चिंताओं, जैसे कि विचाराधीन कैदियों की दुर्दशा, और दीर्घकालिक संरचनात्मक मुद्दों, दोनों को संबोधित करने के लिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है। न्यायिक प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने, न्यायाधीशों और न्यायालय कर्मियों की संख्या बढ़ाने और प्रक्रियात्मक दक्षता बढ़ाने के प्रयास इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसके अतिरिक्त, देरी और अक्षमताओं के मूल कारणों, जैसे पुरानी प्रक्रियाएं और अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, को संबोधित करना अधिक प्रभावी न्यायिक प्रणाली बनाने में आवश्यक होगा। हाल के आंकड़े स्थिति की गंभीरता को रेखांकित करते हैं। 2023 तक, भारत की जेलों की आबादी का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा विचाराधीन कैदियों का है। यह चौंका देने वाला आंकड़ा एक गंभीर मुद्दे को उजागर करता हैरू भारतीय जेलों में बंद व्यक्तियों का एक बड़ा हिस्सा अभी तक मुकदमे का सामना नहीं कर पाया है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार 2.5 लाख से अधिक लोग विचाराधीन कैदी थे। इनमें से कई व्यक्ति लंबे समय तक जेल में रहे हैं, अक्सर दोषी पाये जाने पर उन्हें मिलने वाली सजा की अवधि से अधिक। इन विचाराधीन कैदियों की जनसांख्यिकी एक परेशान करने वाला पैटर्न दिखाती है। उनमें से एक महत्वपूर्ण संख्या समाज के वंचित वर्गों से आती है। अध्ययनों से पता चला है कि गरीबी, शिक्षा की कमी और सामाजिक–आर्थिक नुकसान लंबे समय तक हिरासत में रहने से निकटता से जुड़े हुए हैं। कई विचाराधीन कैदी हाशिए के समुदायों से हैं,अनुसूचित जाति और जनजाति, तथा आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि वाले लोग। इन व्यक्तियों के पास अक्सर कानूनी प्रतिनिधित्व या जमानत प्राप्त करने के लिए संसाधन नहीं होते हैं, जिसके कारण उन्हें बिना किसी सुनवाई के लंबे समय तक कारावास में रहना पड़ता है। विचाराधीन कैदियों की समस्या जमानत प्राप्त करने की प्रणालीगत समस्या से और भी जटिल हो जाती है।

सनी कौशल-नेहा शर्मा ने मुक्के पाये सी का लेवल ऊपर पहुंचा दिया : बी प्राक

> बी प्राक ने कहा, यह मेरे पहले किए गए गानों से काफी अलग है, लेकिन इमोशन्स को जाहिर करने के मामले में यह बिल्कुल वैसा ही है। मुझे यकीन है कि मेरे फैंस इस गाने से जुड़ पाएंगे और इसे उतना ही प्यार देंगे, जितना उन्होंने मेरे दूसरे गानों को दिया है।

मशहूर सिंगर बी प्राक के गानों के लिए फैंस का क्रेज देखने लायक है। उनका गाना रिलीज होने के कुछ ही सेकंड बाद ट्रेंड करने लगता है। अब लोग उनके एक नए सॉन्ग मुक्के पाये सी का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। मुक्के पाये सी में सनी कौशल और नेहा शर्मा नजर आएंगी। गाने के बारे में बात करते हुए बी प्राक ने कहा, जब मैंने पहली बार कम्पोजीशन सुना, तो मैं हैरान रह गया। उन्होंने कहा कि इस गाने में वही इमोशन्स हैं, लेकिन यह उनके पहले के गानों से काफी अलग है। बी प्राक ने कहा, यह मेरे पहले किए गए गानों से काफी अलग है, लेकिन इमोशन्स को जाहिर करने के मामले में यह बिल्कुल वैसा ही है। मुझे यकीन है कि मेरे फैंस इस गाने से जुड़ पाएंगे और इसे उतना ही प्यार देंगे, जितना उन्होंने मेरे दूसरे गानों को दिया है। सनी और नेहा के साथ काम करने को लेकर बी प्राक ने कहा, यह पहली बार है जब मैंने सनी कौशल और नेहा शर्मा के साथ काम किया है। दोनों टैलेंटेड एक्टर्स ने अपने परफॉर्मेंस से गाने को एक अलग लेवल पर पहुंचा दिया है। मैं इस बात का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं कि इसे कैसा रिस्पॉन्स मिलेगा। मैं बहुत नर्वस हूं, लेकिन एक्साइटेड भी हूं। बी प्राक ने इससे पहले सनी के भाई विक्की कौशल के साथ चार्टबस्टर हिट म्यूजिक वीडियो बड़ा पछताओगे में काम किया था। फिलहाल, बी प्राक सूर्या और बॉबी देओल स्टारर कंगुवा के अपने लेटेस्ट ट्रैक 'फायर' की सफलता को एन्जॉय कर रहे हैं। इस गाने के लिए उन्होंने नेशनल अवॉर्ड विनिंग म्यूजिक कंपोजर देवी श्री प्रसाद के साथ दूसरी बार काम किया है। इससे पहले सरिलरु नीकेवरु के ट्रैक सूर्यदिवो चंद्रुदिवो के लिए वे साथ आये थे। करियर की बात करें तो बी प्राक ने श्प्रक्की बीश के नाम से म्यूजिक डायरेक्टर के तौर पर अपना करियर शुरू किया। उनकी मुलाकात 2012 में लिरिसिस्ट जानी से हुई और श्बी प्राकश नाम से उनके साथ सहयोग करना शुरू किया। उन्होंने 2013 में हार्डी संधू द्वारा गाए गए अपने पहले गाने श्सोचश के साथ शुरुआत की। बी प्राक ने जानी के लिरिक्स के साथ जस्सी गिल, हार्डी संधू, अमरिंदर गिल, गिप्पी ग्रेवाल, दिलजीत दोसांझ, एमी विर्क जैसे सिंगर्स के कई ट्रैक के लिए म्यूजिक तैयार किया। उन्होंने 2018 में मन भरया ट्रैक के साथ सिंगर के रूप में शुरुआत की। उन्होंने 2019 में अक्षय कुमार स्टारर केसरी के गाने तेरी मिट्टी में को अपनी आवाज देकर बॉलीवुड में सिंगिंग में पहला कदम रखा।

हिना खान ने शेयर की जिंदगी की सबसे खूबसूरत चीजें, लोग, जगह, यादें...

एक्ट्रेस हिना खान स्टेज 3 ब्रेस्ट कैंसर से जंग लड़ रही हैं। उनका इलाज यहां कोकिलाबेन अस्पताल में चल रहा है। वह कीमोथेरेपी करवा रही हैं। उन्होंने इंस्टाग्राम पर एक सेल्फी वीडियो शेयर करते हुए बताया कि उनके स्वास्थ्य में सुधार है। वीडियो में हिना खान फ्लोरल आउटफिट में नजर आ रही हैं। इसमें एक डायलॉग सुना जा सकता है, जिसमें कहा गया है, ष्जिंदगी की सबसे खूबसूरत चीजें सिर्फ चीजें नहीं हैं... वे लोग और जगहें हैं... यादें और तस्वीरें हैं... भावनाएं और पल... और मुस्कान और हंसी हैं। उन्होंने वीडियो के कैप्शन में बैंडेज्ड हार्ट इमोजी शेयर किया। स्टोरीज सेक्शन में हिना ने स्निपेट शेयर किया और लिखा–हीलिंग यानी ठीक हो रही हूं। एक फैन ने पोस्ट पर कमेंट किया, आपकी आंखों में दर्द दिखाई दे रहा है। एक अन्य यूजर ने कहा, आपकी आंखों में दर्द, डर और बहादुरी एक साथ हैं... भगवान आपको ताकत दे। एक अन्य फैन ने लिखा, आपकी मुस्कान में दर्द है। ये रिश्ता क्या कहलाता है में अक्षरा के किरदार के लिए मशहूर हिना ने फियर फैक्टर खतरों के खिलाड़ी 8, बिग बॉस 11 और बिग बॉस 14 में हिस्सा लिया। वह हैक्ड, विशलिस्ट और शॉर्ट फिल्म स्मार्टफोन का भी हिस्सा रही हैं। उन्होंने भसूड़ी, रांझणा, हमको तुम मिल गए, पत्थर वरगी, बारिश बन जाना, मैं भी बर्बाद, मोहब्बत है, बरसात आ गई और हल्की हल्की सी जैसे म्यूजिक वीडियो में काम किया है। हिना ने हाल ही में गिप्पी ग्रेवाल के साथ शिंदा शिंदा नो पापा से पंजाबी फिल्म में डेब्यू भी किया था। वह जल्द ही फिल्म कंट्री ऑफ ब्लाइंड में भी नजर आएंगी।

सिद्धार्थ मल्होत्रा के लिए आखिर क्यों फिल्म शेरशाह है बेहद खास, किया खुलासा

बॉलीवुड एक्टर सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी स्टारर ब्लॉकबस्टर फिल्म शेहशाह को हिंदी सिनेमा में आज पूरे तीन साल हो गए हैं। यह फिल्म शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा की जिंदगी पर आधारित है, जिनका किरदार सिद्धार्थ मल्होत्रा ने निभाया था। एक्टर ने आईएएनएस से साक्षात्कार में बताया कि फिल्म उनके लिए खास क्यों है? आईएएनएस से बात करते हुए, सिद्धार्थ ने कहा, शेरशाह मेरे लिए एक खास फिल्म है। यह मेरी पहली फिल्म थी जिसे नेशनल अवॉर्ड मिला। उन्होंने कारगिल युद्ध में शहीद हुए कैप्टन विक्रम बत्रा का किरदार निभाने को लेकर कहा, कैप्टन विक्रम बत्रा के किरदार में ढलने की प्रक्रिया रोमांचक और फायदेमंद थी। जब उनसे उनकी जिंदगी में इस फिल्म को अहमियत को लेकर सवाल पूछा गया, तो सिद्धार्थ ने कहा, ष्बहुत कम ही ऐसी फिल्में देखने को मिलती हैं, जिन्हें एक साल बाद भी बेपनाह प्यार मिल रहा होता हैं और शेरशाह उनमें से एक है। इसका जादू आज भी पूरी दुनिया में छाया हुआ है और लोगों के दिल आज भी इसके साथ धड़क रहे हैं। मैंने ये कहानी स्क्रीन पर कही और इस बात पर मुझे गर्व है। 12 अगस्त को सिद्धार्थ ने इंस्टाग्राम पर अपनी कई तस्वीरें शेयर कीं और लिखा, शेरशाह को तीन साल हो गए हैं। कैप्टन विक्रम बत्रा का किरदार निभाना मेरे करियर के सबसे खूबसूरत एक्सपीरियंस में से एक था। उन्होंने अपने पोस्ट में विक्रम बत्रा के माता–पिता के साथ भी तस्वीर शेयर की। इसमें कियारा आडवाणी भी दिखाई दे रही हैं। फिल्म में कियारा आडवाणी ने विक्रम बत्रा की मंगेतर डिंपल चीमा का किरदार निभाया था। शेहशाह का निर्माण धर्मा प्रोडक्शन और काश एंटरटेनमेंट ने किया था। फिल्म की कहानी और गानों को लोगों ने काफी पसंद भी किया।

मनोज कुमार ने सलीम-जावेद से क्रांति का श्रेय छीन लिया : सलमान खान

अभिनेता सलमान खान ने मंगलवार को कहा कि जाने माने अभिनेता मनोज कुमार ने पटकथा लेखक जोड़ी सलीम–जावेद से फिल्म क्रांति के लेखन का श्रेय छीन लिया। सलमान ने डिजिटल इंटरटेनमेंट प्लेटफॉर्म प्राइम वीडियो पर प्रसारित होने वाली डॉक्यूमेंट्री–सीरीज एंग्री यंग मेन के ट्रेलर लॉन्च के अवसर पर यह बात कही। लेकिन, बाद में सलमान ने वर्ष 1981 में आई फिल्म क्रांति की पटकथा की प्रशंसा करते हुए इसे चना जोर गरम कहा। चना जोर गरम अभिनेता मनोज कुमार, दिलीप कुमार और हेमा मालिनी अभिनीत क्रांति के एक गीत का शीर्षक भी है। सलमान सलीम खान के बेटे हैं। सलमान ने क्रांति फिल्म की ओर इशारा करते हुए कहा, ''मनोज कुमार जी, ने सलीम–जावेद से श्रेय छीन लिया। उन्होंने (मनोज कुमार) कहा कि उन्होंने फिल्म की पटकथा लिखी है।'' क्रांति फिल्म के पोस्टर के अनुसार, इसकी कहानी और पटकथा का श्रेय सलीम–जावेद को दिया गया, जबकि संवाद का श्रेय मनोज कुमार को दिया गया। सलमान ने पटकथा लेखकों की दिग्गज जोड़ी सलीम–जावेद की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस जोड़ी ने बड़े पर्दे के लिए कहानियां लिखने के लिए अपने जीवन के अनुभवों से प्रेरणा ली। सलमान ने कहा, ''उन्होंने अपने जीवन से कहानियों की प्रेरणा लीं और उसे अपने सिनेमा में डाल दिया। बाकी लेखकों ने जो किया, वह यह था कि सिनेमा से उठाकर सिनेमा में डाला।

सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल ने शादी के सबसे जादुई पल को साझा किया, `पंडित मंत्रोच्चार कर रहे थे, बैकग्राउंड में अज़ान...'

सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल ने मुंबई में एक निजी समारोह में शादी की। शादी में करीबी दोस्त और परिवार के सदस्य शामिल हुए। गैलाटा इंडिया के साथ एक नए साक्षात्कार में, दोनों ने साझा किया कि वे दोनों अपनी शादी के दिन के सबसे जादुई पल को किस पल के रूप में मानते हैं। जहीर ने बताया कि कन्यादान के समय ऐसा क्यों हुआ।

सोनाक्षी और जहीर ने क्या कहा

साक्षात्कार के दौरान, जब जोड़े से व्यक्तिगत रूप से यह याद करने के लिए कहा गया कि उनकी शादी का सबसे जादुई पल कौन सा था, तो वे दोनों इस बात पर सहमत हुए कि यह कन्यादान था। जहीर ने कहा, मुझे लगता है कि यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा पल है, और यह बहुत खूबसूरत था। कन्यादान में 15 मिनट की देरी हुई थी, और जब हम आखिरकार बैठे, तो मैंने उसका हाथ थामा, और हम प्रार्थना कर रहे थे। अचानक सोना ने कहा, क्या तुम सुन सकते हो? मैंने पूछा, क्या? उसने जवाब दिया, अज़ान चल रही है और यह बहुत ही खूबसूरत पल था। पंडित प्रार्थना कर रहे थे, मंत्र पढ़ रहे थे और जब हम शादी कर रहे थे, तब बैकग्राउंड में अज़ान बज रही थी। ऐसा लगा जैसे कोई दैवीय हस्तक्षेप हो। सोनाक्षी ने भी सहमति में सिर हिलाया और कहाः यह दैवीय था! सोनाक्षी और ज़हीर ने 23 जून, 2017 को शादी करने से पहले सात साल तक डेट किया, उसी दिन उन्होंने डेटिंग शुरू की थी। उन्होंने उसी दिन मुंबई के रेस्टोरेंट, बैस्टियन में एक भव्य रिसेप्शन का आयोजन किया। उन्होंने संयुक्त इंस्टाग्राम पोस्ट के कैप्शन में लिखा ष्इसी दिन, सात साल पहले (23.06.2017) हमने एक–दूसरे की आँखों में प्यार को उसके सबसे शुद्ध रूप में देखा और उसे थामे रखने का फैसला किया। आज उस प्यार ने हमें सभी चुनौतियों और जीत के माध्यम से मार्गदर्शन किया है... इस पल तक पहुँचाया है... जहाँ हमारे दोनों परिवारों और हमारे दोनों देवताओं के आशीर्वाद से... अब हम पति–पत्नी हैं। दोनों ने हाल ही में इंस्टाग्राम पर अपनी एक महीने की सालगिरह की कुछ तस्वीरें साझा कीं, जिनमें वे फिलीपींस में छुट्टियां मनाते नजर आ रहे हैं, जहां उन्होंने एक सप्ताह आराम से बिताया।

झटपट से बनाएं यह मलाई सैंडविच, बच्चे बाहर का बर्गर-पिज्जा खाना भूल जाएंगे

आमतौर पर बच्चों को बाहर का स्ट्रीट फूड कुछ ज्यादा ही पसंद आ रहा है। घर का खाना तो उन्हें पसंद भी नहीं आ रहा है। जब पिज्जा–बर्गर मिल जाए तो बड़े ही स्वाद से खाते हैं, लेकिन घर में हरी सब्जी बन जाए तो उसे खाते नहीं है। बाहर का स्ट्रीट फूड खाने से बीमारियां होती है इसलिए घर पर ही बच्चों के लिए स्ट्रीट फूड जैसा हेल्दी चीजें बनाएं। आज हम इस लेख में लेकर आए मलाई सैडविच की रेसिपी। घर में एक बार बन लिया तो बच्चे बार–बार इसे मांगेंगे। आइए जानते हैं इसे बनाने का तरीका।

मलाई सैंडविच बनाने की सामग्री

–ब्रेड
– ताजा मलाई
– शिमला मिर्च
– प्याज
– टमाटर
– कॉर्न
– काली मिर्च
– ऑरिगैनो
– नमक
– कैचअप
– मक्खन

सैंडविच बनाने की विधि

– सबसे पहले आप मलाई सैंडविच बनाने के लिए सभी सब्जियों को बरीक काट लें।

– इसके बाद इन सब्जियों को मलाई में डालकर इसमें नमक और ऑरेगैनो अच्छी तरह से मिक्स करें।

– अब आप एक ब्रेड स्लाइस पर टोमैटो केचअप की लेयर लगाकर सब्जियों का मिश्रण लगाएं और ऊपर से दूसरा स्लाइस लगाकर सैंडविच बना लें।

– फिर आप हल्का सा बाटर लगाने के बाद इसे सुनहरा होने तक दोनों साइड से सेक लें।

– अब इस सैंडविच को अपने बच्चे की पसंदीदा शेप में काट लें और सॉस के साथ परोसें।

सुधार लें एक हिस्से से खाना चबाने की आदत, नहीं तो बिगड़ जाएगा फेस

एक हिस्से से लगातार खाना चबाने की आदत आपके चेहरे के आकार और स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। यह समस्या तब होती है जब आप किसी विशेष कारण से केवल एक ही तरफ के दांतों का उपयोग करते हैं, जैसे कि दूसरी तरफ दर्द या असुविधा हो रही हो। आइए जानते हैं, इस आदत से कैसे चेहरे का संतुलन बिगड़ सकता है

असमान मांसपेशियों का विकास

जब आप एक ही तरफ के दांतों से खाना चबाते हैं, तो उस तरफ की चेहरे की मांसपेशियां अधिक विकसित हो जाती हैं। दूसरी तरफ की मांसपेशियां कम उपयोग में आती हैं और कमजोर हो जाती हैं। इससे आपके चेहरे का एक हिस्सा भारी या बड़ा दिख सकता है, जबकि दूसरा हिस्सा पतला और छोटा नजर आ सकता है।

चेहरे की असमानता

लगातार एक तरफ से खाना चबाने से चेहरे की असमानता बढ़ सकती है। यह स्थिति आपके चेहरे के दोनों ओर के आकार में अंतर ला सकती है, जिससे चेहरा असमान दिख सकता है।

दांतों और मसूड़ों की समस्याएं

एक तरफ के दांतों पर अधिक दबाव पड़ने से उन दांतों में समस्याएं हो सकती हैं, जैसे कि घिसाव, टूट–फूट, या मसूड़ों की बीमारी। दूसरी तरफ के दांतों का कम उपयोग होने से वहां प्लाक और बैक्टीरिया जमा हो सकते हैं, जिससे दांतों और मसूड़ों की समस्याएं हो सकती हैं।

जबड़े के जोड़ में समस्या

जबड़े के जोड़ पर एक तरफ के चबाने के कारण असमान दबाव पड़ सकता है, जिससे उस जोड़ में दर्द, खिंचाव, या खटखटाहट की समस्या हो सकती है। यह स्थिति आपके पूरे चेहरे और सिरदर्द का कारण बन सकती है।

दांतो के घिसने का खतरा

– एक ही तरफ के दांतों का अत्यधिक उपयोग करने से वो दांत घिस सकते हैं, जो लंबे समय में उन्हें कमजोर बना सकते हैं।

कैसे बचें इस समस्या से

–हमेशा दोनों तरफ के दांतों का उपयोग करके संतुलित रूप से खाना चबाएं। इससे दोनों तरफ की मांसपेशियां समान रूप से विकसित होंगी और चेहरा संतुलित रहेगा।

– किसी भी दांत या मसूड़े की समस्या को तुरंत पहचानने और इलाज करने के लिए नियमित रूप से डेंटिस्ट से परामर्श लें।

–यदि आपको किसी एक तरफ से चबाने की आदत है, तो इसका कारण जानने के लिए डॉक्टर से सलाह लें और उसका समाधान करें।

इसलिए, यदि आप अपने चेहरे की संरचना और दांतों के स्वास्थ्य को बनाए रखना चाहते हैं, तो संतुलित तरीके से खाना चबाना बेहद जरूरी है।

शादी का माहौल बन जाएगा पवित्र और सुखदायक, जब वास्तु के हिसाब से सजाएंगे मंडप

वास्तु शास्त्र के अनुसार, शादी का मंडप शुभता और सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत होना चाहिए। मंडप का निर्माण और उसकी सजावट में वास्तु के कुछ नियमों का पालन करने से शादी का माहौल और भी पवित्र और सुखदायक बन सकता है। आइए जानते हैं, शादी के मंडप के वास्तु नियमों के बारे में

मंडप की दिशा

शादी का मंडप पूर्व दिशा की ओर मुख करके बनाना सबसे शुभ माना जाता है। यह दिशा नई शुरुआत और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। मंडप का मुख्य द्वार उत्तर–पूर्व दिशा की ओर हो, तो यह वर–वधू के लिए अत्यधिक लाभकारी होता है। इससे उनकी शादीशुदा जिंदगी में सुख और समृद्धि आती है।

मंडप का स्थान

मंडप को ऐसे स्थान पर बनाया जाए, जहां प्राकृतिक प्रकाश और हवा का पर्याप्त प्रवाह हो। इससे वातावरण शुद्ध और ऊर्जा से भरपूर रहता है। मंडप को घर के मुख्य द्वार के करीब नहीं बनाना चाहिए, क्योंकि इससे आने–जाने वालों का शोर और हलचल मंडप के माहौल को प्रभावित कर सकती है।

मंडप की संरचना

मंडप का आकार चौकोर या आयताकार होना चाहिए, क्योंकि ये आकार स्थिरता और संतुलन का प्रतीक होते हैं। मंडप के चारों कोनों पर मजबूत स्तंभ होने चाहिए, जो जीवन में स्थिरता और सुरक्षा का संकेत देते हैं।

अग्नि कुंड का स्थान

अग्नि कुंड को मंडप के केंद्र में रखना शुभ माना जाता है। यह पवित्र अग्नि सभी दिशाओं में ऊर्जा का संतुलन बनाए रखती है। अग्नि कुंड को दक्षिण–पूर्व दिशा में भी रखा जा सकता है, क्योंकि यह दिशा अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करती है।

फूलों और सजावट का चुनाव

मंडप को सजाने के लिए प्राकृतिक फूलों का इस्तेमाल करना चाहिए। विशेषकर, गुलाब, गेंदे, और कमल के फूल शुभ माने जाते हैं। सजावट में हल्के रंगों का प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि ये रंग शांति और पवित्रता का प्रतीक होते हैं। लाल और पीला रंग भी शुभता का प्रतीक माना जाता है।

मंडप की ऊंचाई

मंडप की ऊंचाई सामान्य से अधिक होनी चाहिए, जिससे वहां सकारात्मक ऊर्जा का संचार अच्छी तरह से हो सके। मंडप के ऊपर एक कलश या नारियल रखने से शुभता बढ़ती है और बुरी शक्तियों से सुरक्षा मिलती है। मंडप का फर्श साफ और पवित्र होना चाहिए। यदि फर्श पर रंगोली बनाई जाए, तो यह और भी शुभ माना जाता है। फर्श पर सफेद या पीले रंग के कपड़े का प्रयोग करना शुभ होता है, क्योंकि ये रंग पवित्रता और ज्ञान का प्रतीक हैं।

धार्मिक प्रतीक

मंडप में भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी की मूर्तियों या तस्वीरों को रखना शुभ माना जाता है, क्योंकि ये विघ्नों का नाश करते हैं और समृद्धि लाते हैं। मंडप के चारों कोनों पर कलश या दीपक रखना चाहिए, जो ऊर्जा का संचार और शुभता बढ़ाते हैं।

खास ख्याल

– शादी के मंडप में अंधकार या गंदगी नहीं होनी चाहिए। प्रकाश और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

– मंडप के अंदर और बाहर धूप या अगरबत्ती जलाने से वातावरण में पवित्रता बनी रहती है।

– विवाह के दौरान पवित्र मंत्रों का उच्चारण और वाद्य यंत्रों का संगीत होना चाहिए, जिससे माहौल सकारात्मक और आनंदमय बना रहे।

ये हैं देश के 5 सबसे महंगे हिल स्टेशन, जहां पर जाने से खाली हो सकता है आपका अकाउंट

पहाड़ों और चोटियों पर घूमने का अपना ही अलग मजा होता है। वैसे अगर आप भी घूमने के शौकीन हैं, तो अब तक कई हिल स्टेशनों को एक्सप्लोर कर चुके होंगे। लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत में कुछ ऐसी भी पहाड़ी जगहें हैं, जिनको अमीरों का माउंटेन प्लेस कहा जाता है। आज हम आपको इस आर्टिकल के जरिए देश के सबसे महंगे हिल स्टेशनों के बारे में बताने जा रहे हैं। बता दें कि इन जगहों पर घूमने के लिए अच्छा खासा कमाने वालों की भी जेब खाली हो जाती है। ऐसे में अगर आप भी इन जगहों पर जाने का प्लान बना रहे हैं, तो हम आपको उन पहाड़ी जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर घूमकर आपका अकाउंट खाली हो सकता है। पहाड़ों और चोटियों में घूमने का मजा ही कुछ और है, जब तक महीने का एक चक्कर ना लगा लें, तब तक सब कुछ फीका ही लगता है। वैसे अभी तक आप सस्ते हिल स्टेशनों में घूमे होंगे, लेकिन क्या आप जानते हैं भारत में कुछ ऐसी पहाड़ी जगह भी हैं जिन्हें अमीरों का माउंटेन प्लेस भी कहते हैं। जी हां, हम बात कर रहे हैं देश के सबसे महंगे हिल स्टेशनों की, जहां जाकर अच्छे खासे कमाने वालों की भी जेब खाली हो जाती है।

संक्षिप्त

स्पाइसजेट के सह-संस्थापक अजय सिंह 3,000 करोड़ जुटाने के लिए अपनी 10: से अधिक हिस्सेदारी बेचेंगे : रिपोर्ट

स्पाइसजेट के कोफाउंडर जल्द ही कंपनी में अपनी हिस्सेदारी को बेचने की योजना बना रहे है। नकदी संकट से जूझ रही स्पाइजेट को बचाने के लिए स्पाइसजेट के सह–संस्थापक, चेयरमैन और एमडी अजय सिंह कंपनी में अपनी 10: से ज़्यादा हिस्सेदारी को बेचने वाले है। इकनॉमिक टाइम्स ने अज्ञात सूत्रों के हवाले से बताया कि अजय सिंह अपनी 10: से ज़्यादा हिस्सेदारी बेचकर करीब 3,000 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रहे हैं। इसकी पुष्टि हम नहीं करते है। हालांकि बता दें कि यह ऐसे समय में हुआ है जब एयरलाइन की बाजार हिस्सेदारी 4: से नीचे गिर गई है और उसके पास केवल 22 विमान परिचालन में हैं, जबकि इंजन और स्पेयर पार्ट्स उपलब्ध न होने के कारण 30 से अधिक विमान वर्तमान में खड़े हैं। शेयर बिक्री का उद्देश्य कंपनी के लिए नई पूंजी जुटाना है, क्योंकि स्पाइसजेट को तत्काल धन की आवश्यकता है, लेकिन धन जुटाने के प्रयास अब तक निरर्थक रहे हैं। कंपनी ने वेंडरों को भुगतान करने में भी चूक की है, जिसमें विमान पट्टेदार भी शामिल हैं, जिसके कारण कुछ लोगों ने एयरलाइन को दिवालिया घोषित करने के लिए अदालत में याचिका दायर की है। कंपनी की नवीनतम वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, स्पाइसजेट की कुल देनदारियाँ लगभग 9,000 करोड़ रुपये थीं, जिसमें विमान पट्टेदारों के लिए 2,700 रुपये शामिल हैं। एयरलाइन ने पहले 64 निवेशकों के समूह से 2,250 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बनाई थी, लेकिन प्राथमिक निवेशकों में से एक के पीछे हट जाने के कारण केवल 1,060 करोड़ रुपये ही जुटा सकी। इसके अलावा, स्पाइसजेट ने हाल ही में भविष्य निधि अंशदान में चूक के बाद कर्मचारियों को उनके वेतन का भुगतान करने में भी देरी की थी। हालांकि, एयरलाइन ने दावा किया कि उसके 95: कर्मचारियों को ष्चरणबद्ध तरीके सेष वेतन मिला। रिपोर्ट में कहा गया है कि सिंह की हिस्सेदारी 30–35: के बीच घटने की उम्मीद है, उनके और उनके परिवार के पास वर्तमान में एयरलाइन में 47.8: हिस्सेदारी है, और 38.8: हिस्सा ऋणदाताओं के पास गिरवी रखा गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि फंड जुटाने की प्रक्रिया का प्रबंधन करने के लिए आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज और जेएम फाइनेंशियल को नियुक्त किया गया है।

ईडी ने रेलिगेयर मनी लॉन्ड्रिंग जांच में डाबर के मोहित बर्मन को तलब किया : रिपोर्ट

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कथित मनी लॉन्ड्रिंग जांच के सिलसिले में डाबर इंडिया के चेयरमैन मोहित बर्मन को तलब किया है। केयर हेल्थ इंश्योरेंस के तीन स्वतंत्र निदेशकों और ओपन ऑफर के प्रबंधक को तलब किया है। यह जांच रेलिगेयर एंटरप्राइजेज (आरईएल) के शेयरधारकों के लिए बर्मन परिवार की ओपन ऑफर से संबंधित है। द इकोनॉमिक टाइम्स की एक रिपोर्ट में ये जानकारी दी गई है। यह जांच रेलिगेयर समूह के अंतर्गत आने वाली एक गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबीएफसी) रेलिगेयर फिनवेस्ट से निकाले गए धन को खुली पेशकश से जुड़ी कंपनियों में लगाए जाने के आरोपों से जुड़ी है। आरईएल के शेयरधारक वैभव गवली की शिकायत के बाद जांच शुरू की गई थी, जिन्होंने बर्मन परिवार पर आरईएल के शेयरधारकों के लिए अपने ओपन ऑफर में झूठे दावे और गलत बयानी करने का आरोप लगाया था। शिकायत में आरोप लगाया गया था कि इससे शेयरधारकों को अपने शेयर बेचने के लिए प्रेरित किया गया, जबकि ऑफर से जुड़े जोखिमों का पूरी तरह से खुलासा नहीं किया गया था। इसने वैभव गवली जैसे शेयरधारकों को वित्तीय नुकसान पहुंचाया, जिन्होंने ऑफर की घोषणा के बाद शेयर खरीदे थे। रिपोर्ट के अनुसार, यह पहली बार है जब किसी जांच एजेंसी ने रेलिगेयर–बर्मन विवाद से जुड़े सभी पक्षों को तलब किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ईडी पहले ही वैभव गवली का बयान दर्ज कर चुका है। रिपोर्ट में कहा गया है कि बर्मन ने कहा है कि खुली पेशकश की कीमत 235 रुपये निर्धारित की गई थी, जो सेबी के अधिग्रहण नियमों के आधार पर 221 रुपये की गणना की गई कीमत से अधिक थी।

स्टारबक्स के पूर्व सीईओ का पुराना इंटरव्यू हुआ वायरल, काम करने को लेकर दी बड़ी जानकारी

स्टारबक्स ने घोषणा की है कि वह अपने वर्तमान सीईओ लक्ष्मण नरसिम्हन का स्थान ले रहा है। सिएटल स्थित कॉफी कंपनी ने कहा कि चिपोटल के सीईओ ब्रायन निकोल नए लीडर बनेंगे। उम्मीद के मुताबिक, इस घोषणा को लेकर सोशल मीडिया पर हलचल मच गई है। इन सभी पोस्ट के बीच नरसिम्हन का एक महीने पुराना इंटरव्यू भी वायरल हो रहा है। वीडियो में वे कहते सुनाई दे रहे हैं कि वे अपने काम और जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए शाम 6 बजे के बाद काम नहीं करते। एक एक्स यूजर ने इंटरव्यू के बारे में बताते हुए लिखा, स्टारबक्स के सीईओ लक्ष्मण नरसिम्हन ने हाल ही में कहा कि वे शाम 6 बजे के बाद काम नहीं करते हैं और अगर स्टारबक्स में किसी को शाम 6 बजे के बाद उनका एक मिनट भी मिलता है तो उन्हें सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि यह महत्वपूर्ण है। उन्हें आज ही नौकरी से निकाल दिया गया। फॉर्च्यून पत्रिका के साथ एक साक्षात्कार में, 57 वर्षीय ने विभिन्न विषयों पर चर्चा की। जब साक्षात्कारकर्ता ने उनके कार्य–जीवन संतुलन के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि वह शाम 6 बजे तक अपना काम समाप्त कर लेते हैं, और कहा कि यदि वह उस समय से आगे भी रुकते हैं, तो यह ष्बहुत महत्वपूर्णष होगा। बता दें कि पूर्व सीईओ का नाम गूगल पर भी ट्रेंड कर रहा है क्योंकि लोग उनके बारे में अधिक जानने के लिए सर्च कर रहे हैं। कई लोग उनकी सैलरी जानने में भी रुचि रखते हैं। नरसिम्हन ने सीईओ के पद से तत्काल प्रभाव से इस्तीफा दे दिया है। वह अब स्टारबक्स बोर्ड के सदस्य भी नहीं हैं। नए सीईओ निकोल जल्द ही यह नई भूमिका संभालेंगे। तब तक, स्टारबक्स की मुख्य वित्तीय अधिकारी (सीएफओ) रेचल रग्गेरी अंतरिम सीईओ के रूप में काम करेंगी।

रिकी पोंटिंग ने की गौतम गंभीर और जेसन गिलेस्पी की तुलना, व्हाट्सअप ग्रुप वाला खुलासा किया

रिकी पोंटिंग ने गिलेप्सी की तारीफ करते हुए उनकी तुलना गौतम गंभीर से की है। पोंटिंग का कहना है कि दोनों गहराई से सोचते हैं और शांत तरीके से काम करते हैं। पोंटिंग ने गिलेस्पी को लेकर व्हाट्सअप ग्रुप वाला खुलासा भी किया है। बता दें कि, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इस साल अप्रैल में ऑस्ट्रेलिया के पूर्व दिग्गज तेज गेंदबाज गिलेस्पी को कोच नियुक्त किया है।

ऑस्ट्रेलिया के ग्लेन गिलेप्सी पाकिस्तान क्रिकेट टीम के नए टेस्ट कोच बने हैं। वहीं अब पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान रिकी पोंटिंग ने गिलेप्सी की तारीफ करते हुए उनकी तुलना गौतम गंभीर से की है। पोंटिंग का कहना है कि दोनों गहराई से सोचते हैं और शांत तरीके से काम करते हैं। पोंटिंग ने गिलेस्पी को लेकर व्हाट्सअप ग्रुप वाला खुलासा भी किया है। बता दें कि, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने इस साल अप्रैल में ऑस्ट्रेलिया के पूर्व दिग्गज तेज गेंदबाज गिलेस्पी को कोच नियुक्त किया है। वहीं पीसीबी ने वनडे और टी20 टीम का हेड कोच साउथ अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज गैरी कर्स्टन को बनाया। पोंटिंग और गिलेस्पी लंबे समय तक साथ खेल चुके हैं। पोंटिंग ने आईसीसी रिव्यू पर कहा कि, जेसन गिलेस्पी कुछ हद तक गंभीर जैसे हैं। वो जहां भी गए हैं, उनका कोचिंग रिकॉर्ड बहुत अच्छा रहा है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्हें कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। लेकिन वे कीफ सोच–विचार करने वाले शख्स हैं और फिर अपना काम करेंगे। वह शांत हैं और अपने तरीके से काम करते हैं। साथ ही पोंटिंग ने दावा किया है कि, गिलेस्पी की कोचिंग में पाकिस्तान टीम में बदलाव देखने को मिलेंगे। उन्होंने कहा कि, पिछले कई सालों से हमारे कुछ व्हाट्सएप ग्रुप हैं, ग्रुप में पुराने खिलाड़ी हैं जो एकसाथ खेल चुके हैं। सभी ने नई जिम्मेदारी के लिए गिलेस्पी को शुभकामनाएं दीं। देखिए, ईमानदारी से कहूं तो मैं टीम में बदलाव होने पर बिल्कुल भी हैरान नहीं होने वाला हूं। मुझे पता है कि ये एकअलग फॉर्मेट है लेकिन पाकिस्तान ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 में बहुत निराशाजनक प्रदर्शन किया। अगर आप कुछ बदलाव करने को तैयार नहीं हैं तो आप इसी तरह के नतीजों की उम्मीद कर रहे हैं।

हार्दिक पंड्या हैं चीटर! नताशा से अलग होने के बाद इस हसीना को कर रहे हैं डेट

अटकलें लगाई जा रही हैं कि हार्दिक पंड्या और जैसमीन एक साथ ग्रीस में छुट्टी मना रहे हैं। ये अफवाहें तब से शुरू हुई जब से हार्दिक और जैसमीन ने एक ही पूल के किनारे से इंस्टाग्राम पर तस्वीरें पोस्ट की। दोनों ने एक ही पूल की लोकेशन के फोटो और वीडियो अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किए हैं। टीम इंडिया के स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या किसी ना किसी कारण चर्चाओं में बने रहते हैं। फिर चाहे वो उनका क्रिकेट हो या फिर उनकी पर्सनल लाइफ, कुछ दिनों से वह अपने रिश्ते को लेकर सुर्खियों में थे। जिसके बाद वह अपनी पत्नी नताशा स्टेनकोविक से तलाक लेकर अलग हो गए। वहीं अभी उनके तलाक को एक महीना भी नहीं हुआ था कि, अब उनका नाम एक और हसीना से जुड़ने लगा है। दरअसल, कहा जा रहा है कि, हार्दिक पंड्या और ब्रिटिश सिंगर जैस्मीन वालिया एक–दूसरे को डेट कर रहे हैं। इस दौरान दोनों की तस्वीरें खूब वायरल हो रही हैं। बता दें कि, अटकलें लगाई जा रही हैं कि हार्दिक पंड्या और जैसमीन एक साथ ग्रीस में छुट्टी मना रहे हैं। ये अफवाहें तब से शुरू हुई जब से हार्दिक और जैसमीन ने एक ही पूल के किनारे से इंस्टाग्राम पर तस्वीरें पोस्ट की। दोनों ने एक ही पूल की लोकेशन के फोटो और वीडियो अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किए हैं। जिसके बाद कहा जा रहा है कि, हार्दिक पंड्या ने नताशा को चीट किया। जहां एक तरफ जैसमीन ने ब्लू बिकनी में अपनी एक सिजलिंग तस्वीर पोस्ट की है। वो पूल के किनारे स्टाइलिश पोज़ देती नजर आ रही हैं। उन्होंने स्ट्रॉ हैड और ओवरसाइज सनग्लासेस के साथ अपने लुक को कंप्ली किया। इसके कुछ समय बाद ही हार्दिक पंड्या ने उसी पूल के चारों ओर घूमते हुए अपना एक वीडियो शेयर किया। इस दौरान वह क्रीम कलर की पैंटस ओवरसाइज्ड शर्ट और सनग्लासेस लगाए नजर आ रहे हैं। वहीं हार्दिक पंड्या ने जैसमीन की तस्वीरों पर कोई कमेंट्स नहीं किए हैं लेकिन उन्होंने उनकी तस्वीरें लाइक जरूर की हैं।

मोर्नी मोर्केल बने टीम इंडिया के गेंदबाजी कोच, 1 सितंबर से संभालेंगे कमान

भारतीय क्रिकेट टीम को आखिरकार अपना गेंदबाजी कोच मिल ही गया। दरअसल, साउथ अफ्रीका के पूर्व तेज गेदंबाज मोर्नी मोर्केल को टीम इंडिया का नया बॉलिंग कोच बनाया गया है। उनका कॉन्ट्रैक्ट 1 सितंबर से शुरू होगा। जय शाह ने इस बात की जानकारी खुद एक क्रिकेट वेबसाइट को दी है। बता दें कि, गौतम गंभीर ने पहले भी भारतीय क्रिकेट बोर्ड से गेंदबाजी कोच के पद के लिए मोर्कल के नाम पर विचार कनरे का अनुरोध किया था। मोर्केल ने 2006 से 2018 के बीच 86 टेस्ट, 117 वनडे और 44 टी20 मैच खेले हैं। बता दें कि, गंभीर और मोर्कल दोनों के बीच लखनऊ सुपर जांयट्स में अच्छे संबंध रहे हैं। जहां, गंभीर ने दो साल तक मेंटर के रूप में काम किया। गंभीर के कोलकाता नाइट राइडर्स में शामिल होने और हेड कोच एंडी फ्लावर के रॉयल चौलेंजर्स बेंगलुरु में चले जाने के बाद मोर्कल नए हेड कोच जस्टिन लैंगर के साथ फ्रैंचाइजी के गेंदबाजी कोच के रूप में बन रहे। मोर्नी मोर्कल ने नवंबर 2023 तक पाकिस्तान की नेशनल क्रिकेट टीम के गेंदबाजी कोच के रूप में काम किया। मोर्कल ने 2006 में टेस्ट मैच में डेब्यू किया और दक्षिण अफ्रीका की टीम के लिए 86 टेस्ट खेले।

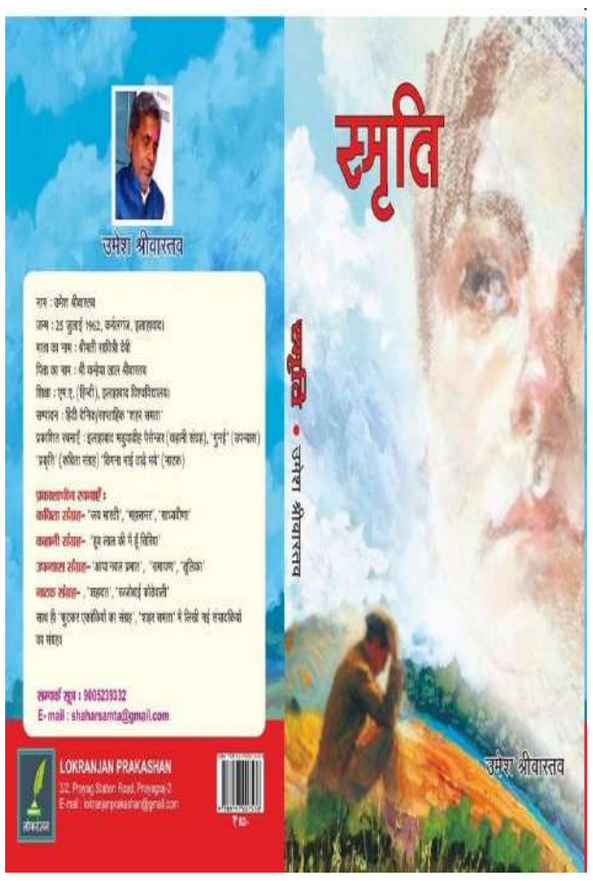

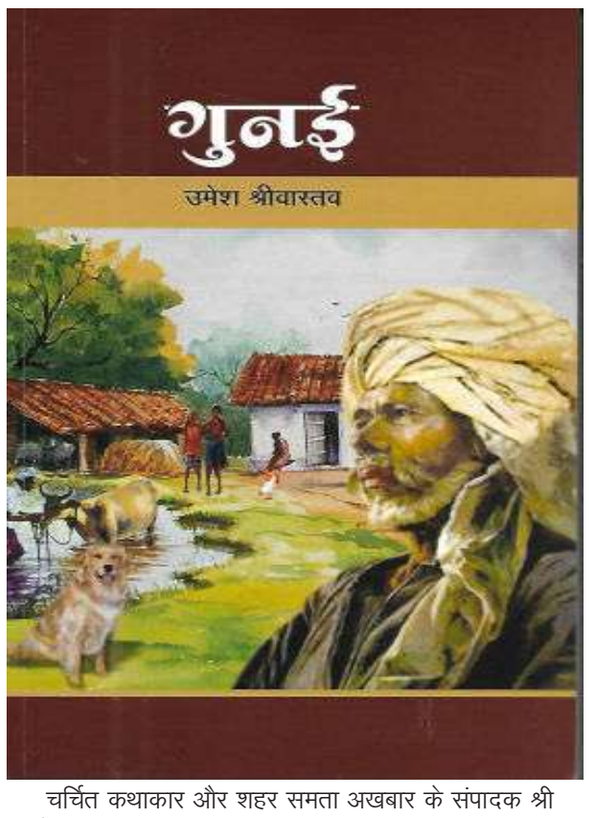

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित उपन्यास गुनई अमेजन पर उपलब्ध हो गया है। पुस्तक

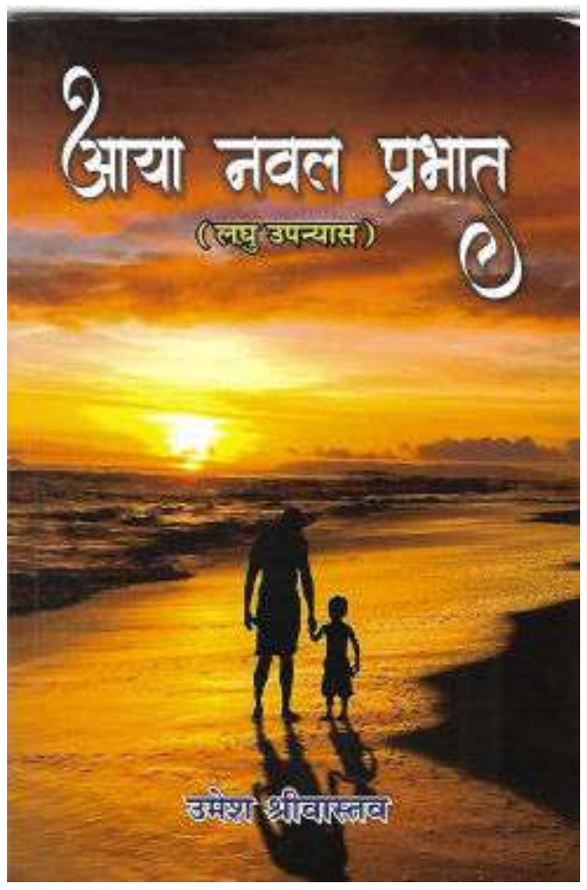

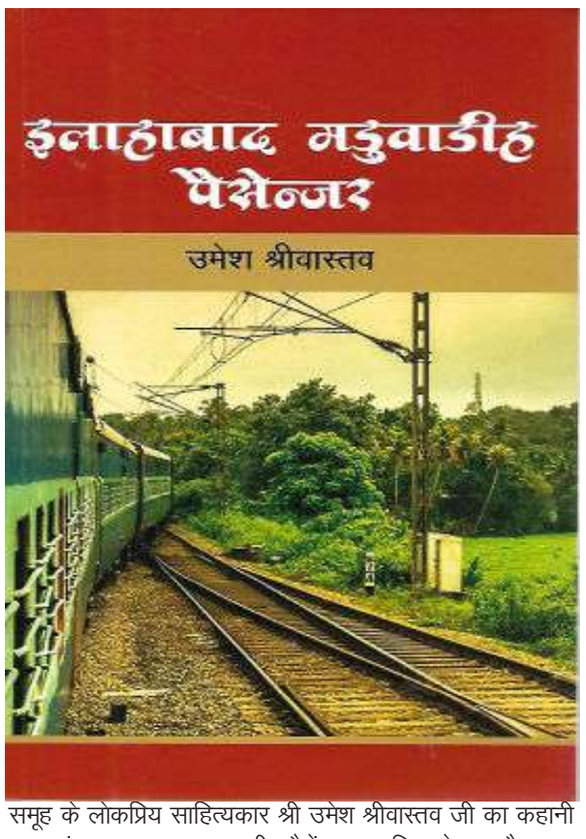

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना। पुस्तक अमेजन पर उपलब्ध है।

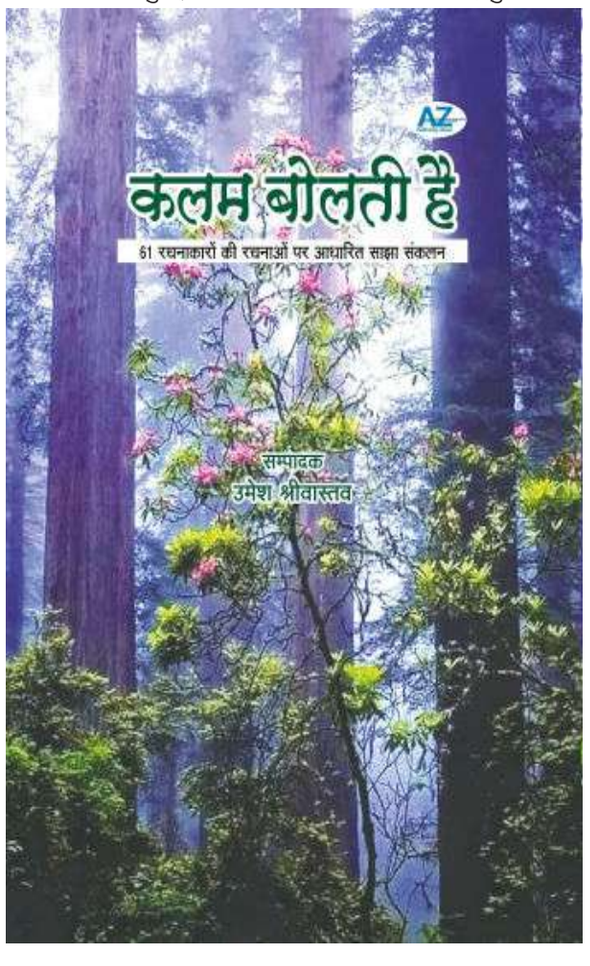

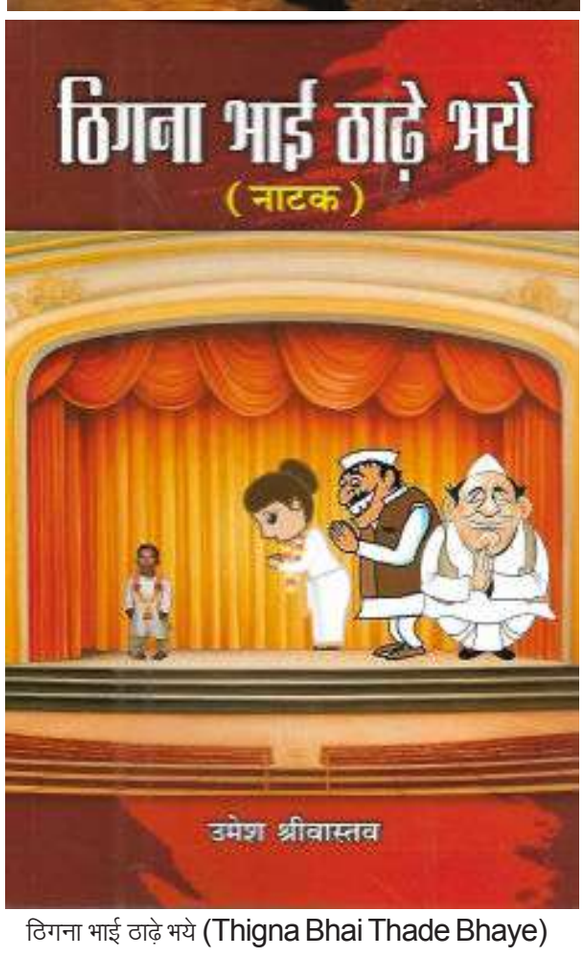

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

जापान को मिलेगा नया प्रधानमंत्री, फुमियो किशिदा ने पार्टी अध्यक्ष पद के चुनाव से पीछे हटाया कदम

जापानी प्रधान मंत्री फुमियो किशिदा ने बुधवार को घोषणा की कि वह सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी के आगामी नेतृत्व चुनाव में भाग नहीं लेंगे। बुधवार की प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान, किशिदा ने अपने फैसले को सही ठहराते हुए कहा कि आगामी राष्ट्रपति चुनाव के लिए, जनता के सामने यह प्रदर्शित करना आवश्यक है कि लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी बदलाव के लिए तैयार है। इसके लिए पारदर्शी और खुले चुनाव के साथ–साथ स्वतंत्र और खुले चुनाव की भी आवश्यकता है। एलडीपी के परिवर्तन का संकेत देने वाला पहला स्पष्ट कदम मेरी वापसी है। उन्होंने अपने

प्रशासन की उपलब्धियों की प्रशंसा की, वेतन वृद्धि और निवेश पर प्रकाश डाला जिससे तीन दशकों की अपस्फीति समाप्त हो गई। इसके अतिरिक्त, किशिदा ने उल्लेख किया कि उनकी सरकार ने बिजली की मांग में वृद्धि को संबोधित करने के लिए अपनी ऊर्जा नीति में सुधार किया है और घटती जन्मदर से निपटने और जापान की रक्षा क्षमताओं को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। किशिदा ने कहा कि मुझे अपने प्रशासन द्वारा हासिल की गई पर्याप्त उपलब्धियों पर गर्व है। उन्होंने एक नए नेता के लिए अपना समर्थन भी व्यक्त किया। जापान टुडे ने बताया कि साल की शुरुआत में स्थानीय चुनावों में हार के बाद किशिदा का प्रभाव कम हो गया, जिससे एलडीपी को निराशा हुई। सांसद अगले आम चुनाव से पहले नए नेतृत्व की मांग करेंगे। अक्टूबर 2021 में प्रधानमंत्री बने किशिदा एलडीपी के भीतर राजनीतिक फंडिंग घोटाले के मद्देनजर पद छोड़ रहे हैं। पार्टी कार्यक्रम टिकटों की बिक्री से कथित तौर पर असूचित राजनीतिक धन पर केंद्रित, इस घोटाले में 80 से अधिक एलडीपी सदस्य शामिल थे। एलडीपी के एक वरिष्ठ सदस्य ने एनएचके को अनसुलझे मुद्दों के बीच उनके इस्तीफे को गैर–जिम्मेदाराना बताते हुए, उन्हें रुकने के लिए मनाने के अपने प्रयासों के बारे में बताया। सरकारी मीडिया आउटलेट क्योदो ने यह जानकारी दी।

अफगानिस्तान में जा घुसा पाकिस्तान का फाइटर जेट, गुस्साए तालिबान ने दनादन तोप के गोले दागने शुरू कर दिए

पाकिस्तान और अफगानिस्तान की तालिबान सरकार के बीच तनाव अंतिम चरण पर है। इसके पीछे की वजह है पाकिस्तान की सेना की नापाक हरकत सामने आई है। दरअसल, खबर है कि अफगानिस्तान में पाकिस्तान ने अपने किलर ड्रोन और फाइटर जेट भेज दिए हैं। टोलो न्यूज के हवाले से ये जानकारी सामने आई है। लेकिन इस बात की जानकारी जैसे ही तालिबान को लगी उसने पाकिस्तान को धमकी दे डाली। डुरंग लाइन पर दनादन तोपों गरजनी शुरू हो गई। भड़के हुए तालिबान के प्रवक्ता मुजाहिद ने ऐलान करते हुए कहा कि उनकी सरकार पाकिस्तानी फाइटर जेट के घुसने की जांच कर रही है। किसी भी देश को अफगानिस्तान के हवाई क्षेत्र के उल्लंघन का अधिकार नहीं है।

शेख हसीना ने देश छोड़ने के बाद अपने पहले बयान में मांगा न्याय, बदले में बांग्लादेश ने ठोक दिया हत्या का मुकदमा

बांग्लादेश छोड़ने के बाद दिये अपने पहले बयान में शेख हसीना ने अपने पिता की मूर्ति को खंडित किये जाने पर दुख जताया है और अपने लिये न्याय की मांग की है। दूसरी ओर बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने शेख हसीना और उनके कुछ करीबियों के खिलाफ हत्या का मामला चलाने का निर्देश दे दिया है। इस बीच अंतरिम सरकार के मुखिया मोहम्मद यूनुस ने अल्पसंख्यक हिंदुओं से मुलाकात कर उन्हें सुरक्षा का आश्वासन दिलाया है। देखा जाये तो बांग्लादेश में जीवन धीरे–धीरे पटरी पर आ रहा है लेकिन देश के भविष्य पर अब भी अनिश्चय के बादल छाये हुए हैं क्योंकि अभी यह साफ नहीं है कि कब चुनावों की घोषणा की जायेगी। जहां तक शेख हसीना के बयान की बात है तो आपको बता दें कि बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री ने ष्न्यायष की मांग करते हुए कहा है कि हाल के "आतंकवादी कृत्यों", हत्याओं और तोड़फोड़ में शामिल लोगों की जांच कर उनकी पहचान की जानी चाहिए तथा उन्हें दंडित किया जाना चाहिए।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।